सितम्बर 2021

अंक—एकादश

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिमज्योति

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखण्ड, देहरादून

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिमज्योति

सितम्बर 2021 | अंक–एकादश

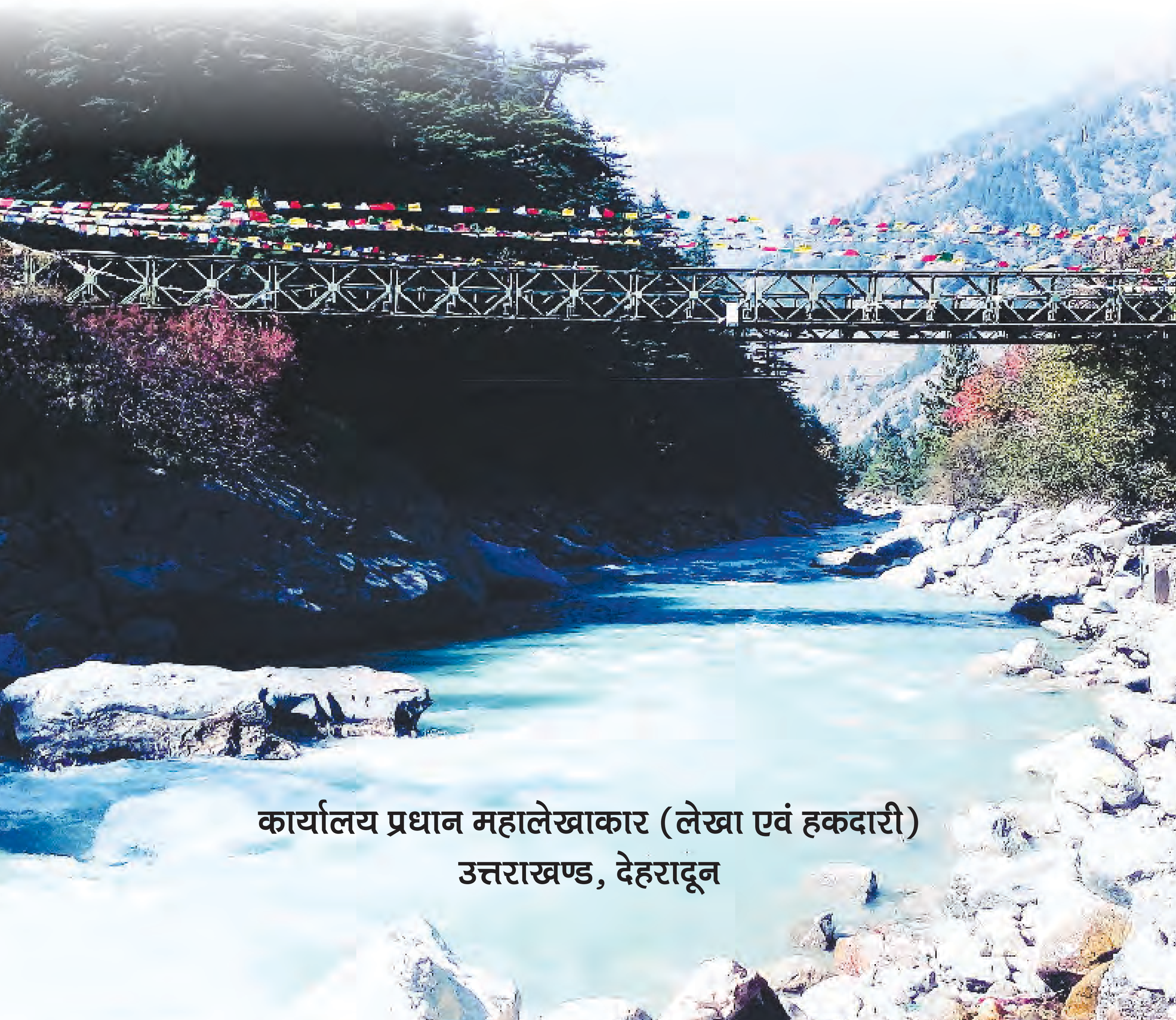

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखण्ड, देहरादून

संदीप सिंह
प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी)

सन्देश

कार्यालय की लोकप्रिय पत्रिका हिमज्योति के एकादश अंक के प्रकाशन के सुअवसर पर मुझे अत्यंत हर्ष एवं संतोष की अनुभूति हो रही है। इसके लिए संपादक मंडल सहित समस्त रचनाकार एवं सहयोगीगण बधाई के पात्र हैं, जिनके सार्थक एवं सहकारी प्रयासों से ही पत्रिका के रूपायन को एक नया आयाम प्राप्त हुआ है। पत्रिका कार्यालय के कार्मिकों को कार्यालयीन गतिविधियों से इतर उनकी साहित्यिक एवं रचनात्मक लेखन प्रतिभा को हिंदी में अभिव्यक्त करने का एक सशक्त मंच प्रदान करती है और उनके सृजनात्मक कौशल एवं रचनाधर्मिता की एक मानक कसौटी सिद्ध होती है, जिसकी अपेक्षाओं के अनुरूप वे बेहद खरे उतरते हैं। इस प्रकार पत्रिका न केवल कार्मिकों की सर्जनात्मक अभिव्यक्तियों एवं क्षमताओं को दस्तावेजी स्वरूप में सँजोकर प्रस्तुत करती है बल्कि राजभाषा हिंदी के सतत उन्नयन एवं प्रचार–प्रसार हेतु निर्धारित लक्ष्यों की प्रतिपूर्ति में भी अपना अहम् योगदान प्रदर्शित करती है।

मैं संपादक मंडल सहित समस्त सहयोगीगणों को पुनः साधुवाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि सभी कार्मिक राजभाषा हिंदी के प्रति निष्ठावान रहेंगे और अपने कार्यों में हिंदी भाषा के शत–प्रतिशत प्रयोग को सुनिश्चित करेंगे।

सन्दीप सिंह
संरक्षक

नचिकेता ताल, उत्तरकाशी उत्तराखण्ड
छायाचित्र – प्रशांत किमोठी (खण्डीय लेखाधिकारी–II)

सत्यमेव जयते

रवि कुमार वर्मा
उपमहालेखाकार (प्रशासन एवं लेखा)

प्रधान संपादक की कलम से

नए एवं उत्कृष्ट कलेवर के साथ कार्यालयीन पत्रिका "हिमज्योति" के एकादश अंक को आपके हाथों में सौंपते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। इस अंक में पत्रिका की परंपरा को एक नया आयाम देने का प्रयास किया गया है। पत्रिका का फलक बेहद ही व्यापक है, जो कि कार्मिकों की रचनाओं के वैविध्य एवं विस्तार को यथासंभव समाहित करता है। कार्यालय की अथक साधना के परिणामस्वरूप यह पत्रिका अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सरस कृतियों के संकलन के रूप में कालांतर के लिए एक साहित्यिक अभिलेख एवं धरोहर है, जो कि कार्यालय के रचनाकारों के समकालीन विषयों एवं उनकी अनुभूतियों को कलात्मक एवं रचनात्मक ढंग से चित्रित करती है और राजभाषा हिंदी के विकास एवं प्रचार–प्रसार में उनके दृढ़ संकल्प एवं उत्साह को व्यक्त करती है। राजभाषा हिंदी का उत्थान ही पत्रिका का मूल ध्येय है, जिसके कलेवर एवं साज–सज्जा के लिए मैं संपादक मंडल सहित समस्त रचनाकारों के प्रयासों की सराहना करता हूँ एवं उनको बधाई देता हूँ।

इसके अतिरिक्त, मैं पत्रिका के सभी सुधी एवं शुभेच्छु पाठकगणों को उनकी प्रतिक्रियाओं एवं सुझावों के लिए अपना धन्यवाद व्यक्त करता हूँ और इस अंक के लिए भी उनके बहुमूल्य सुझावों की प्रतीक्षा एवं स्वागत करता हूँ।

प्रधान संपादक

“हिमज्योति पत्रिका परिवार”

संरक्षक एवं निदेशक
श्री संदीप सिंह
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

प्रधान संपादक
श्री रवि कुमार वर्मा
उपमहालेखाकार (प्रशासन एवं लेखा)

संपादक
डॉ0 काव्यदीप जोशी
वरिष्ठ उपमहालेखाकार (निधि)

सलाहकार संपादक
श्री बृजेश खुल्बे
वरिष्ठ लेखाधिकारी

सहायक संपादक

श्री अजय कुमार पाल
सहायक लेखाधिकारी (तदर्थ)

श्रीमती दीपा पवार
सहायक लेखाधिकारी (तदर्थ)

डॉ0 दिनेश शर्मा
सहायक लेखाधिकारी (तदर्थ)

पर्यवेक्षण
श्रीमती पूर्णिमा चटर्जी
पर्यवेक्षक

साज सज्जा
श्रीमती बीना रावत
वरिष्ठ लेखाकार

टंकण
श्री चौधरी कौशतव
आँकड़े प्रविष्टि संचालक

आवरण पृष्ठः द्यारा बुग्याल, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

पार्श्व पृष्ठः गंगोत्री रेंज

छायाकार – श्री प्रशांत किमोठी (खण्डीय लेखाधिकारी–II)

रचनाकारों के विचारों से संपादक मण्डल की सहमति आवश्यक नहीं है।

डॉ0 काव्यदीप जोशी
वरिष्ठ उपमहालेखाकार (निधि)

सम्पादकीय

हिंदी के देशव्यापी विस्तार एवं सामर्थ्य के दृष्टिगत इसे संघ की राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया है। संवैधानिक एवं नैतिक दायित्वों पर निष्ठापूर्वक अमल करते हुए राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग एवं प्रचार–प्रसार में कार्यालय की गृह पत्रिका "हिमज्योति" निरंतर अहम् भूमिका निभा रही है। हर्ष का विषय है कि अभी तक इसके 10 अंक प्रकाशित हो चुके हैं और समयबद्धता एवं निरंतरता की इस कड़ी में राजभाषा हिंदी के सेवार्थ समर्पित हिमज्योति का ग्यारहवाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। इसमें विभिन्न विषयों को समाहित कर इसके कलेवर को अधिक आकर्षक, उपयोगी एवं प्रयोजनमूलक बनाने का प्रयास किया गया है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि सरल व सुबोध भाषा में प्रकाशित यह अंक पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक होगा। मैं पत्रिका के लिए योगदान देने वाले सभी लेखकों तथा संपादक मंडल के सदस्यों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ और आशा करता हूँ कि पत्रिका के प्रकाशन में उनका अमूल्य सहयोग इसी प्रकार प्राप्त होता रहेगा।

संपादक

हिमज्योति सम्पादक मण्डल

बैठे हुए (बायें से दायें) : श्री रवि कुमार वर्मा, उप महालेखाकार (प्रशासन एवं लेखा) – प्रधान संपादक
श्री संदीप सिंह, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) – संरक्षक
डॉ0 काव्यदीप जोशी, वरिष्ठ उप महालेखाकार (निधि) – संपादक

खड़े हुए (बायें से दायें) : श्री बृजेश खुल्बे, वरिष्ठ लेखाधिकारी – सलाहकार संपादक
डॉ0 दिनेश शर्मा, सहायक लेखाधिकारी (तदर्थ) – सहायक संपादक
श्रीमती दीपा पवार, सहायक लेखाधिकारी (तदर्थ) – सहायक संपादक
श्री अजय कुमार पाल, सहायक लेखाधिकारी (तदर्थ) – सहायक संपादक

प्रतिक्रियाएँ

पिछले वर्ष प्रकाशित 'हिमज्योति' के दशम् संस्करण के लिए हमें अपने सुधी पाठकों से अत्यंत प्रेरक व उत्साहवर्धक प्रतिक्रियायें प्राप्त हुयी हैं, जिनमें से कुछ प्रतिक्रियाओं को यहाँ पर रचनाकारों के लेखन को प्रोत्साहित करने की प्रत्याशा के साथ प्रकाशित किया जा रहा है। पाठकों की प्रतिक्रियायें प्रोत्साहन के लिए पोषण का प्रतिरूप होती हैं, जिनके आलोक में हमें यथाअपेक्षित बेहतर सुधारों के प्रगामी प्रयोग हेतु भविष्य का पथ प्रदर्शित होता है। इसी परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत अंक के लिए भी आपके बहुमूल्य सुझाव व प्रतिक्रियाएँ पूर्व की भाँति ही सादर आमंत्रित हैं।

आपके कार्यालय की पत्रिका "हिमज्योति" का 10वाँ अंक प्राप्त हुआ इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। यह अंक अपने कलेवर, साज–सज्जा, मुद्रण, स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहरी बन पड़ा है। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय हैं। इस अंक में प्रकाशित आलेख, कविताएँ, कहानियाँ, संस्मरण आदि अत्यंत स्तरीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। डॉ0 दिनेश शर्मा द्वारा रचित आलेख "डिजिटल क्रांति का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव" तथा श्री प्रशांत जोशी द्वारा लिखित कविता "बचपन" अत्यधिक उल्लेखनीय हैं। राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है। यह बहुत ही सकारात्मक प्रक्रम है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करे यही कामना है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय महालेखाकार (ले0 एवं हक0)
तमिलनाडु, चेन्नई – 18

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "हिमज्योति" के दशम् अंक की प्रति प्राप्त हुई। तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है।

पत्रिका का मुख्य पृष्ठ एवं साज–सज्जा उत्कृष्ट है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ अति–प्रासंगिक, ज्ञानवर्धक एवं स्तरीय हैं। श्री बृज भूषण सेमवाल का यात्रा वृतांत *"मनोकामना पूर्ण करती माँ वैष्णो देवी की यात्रा"* ज्ञानवर्धक है तथा श्री अजय कुमार पाल की कविता *"जिजीविषा"*, श्री शिवम् लिल्हौरी की कविता *"प्रभु लीला"* एवं लेख *"दूनी तुकबंदी"* तथा बाकी सभी रचनाएँ भी अभिव्यक्ति की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा, रक्षा सेवाएं
एल–II ब्लॉक, ब्रासे एवेन्यू, नई दिल्ली – 110001

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका "हिमज्योति" के दशम् अंक सितंबर 2020 की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सभी लेख, कविताएं आदि पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाएं उत्तम स्तर की हैं, इसके लिए सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका का प्रत्येक पृष्ठ विविध रंगों से परिपूर्ण होने के कारण साज–सज्जा बहुत ही सुंदर है। पत्रिका के मुखपृष्ठ पर दिया गया हिमखंडों का चित्र और अंतिम पृष्ठ पर दिया गया आइस रिंक का चित्र इतना सजीव लगता है कि मानो हमारी आँखें पत्रिका में अंकित चित्रों को नहीं बल्कि स्वयं ही इन बर्फीली वादियों के नजारों को देख रही हैं। श्री आशीष मलिक, सहायक लेखाधिकारी द्वारा प्रस्तुत चित्र भी बहुत ही सुंदर है। निसंदेह उत्तराखण्ड राज्य, धरती पर सुंदर स्थानों में से एक की पूर्ण पात्रता धारण करता है। पत्रिका में हिन्दी पखवाड़े तथा गणतंत्र दिवस की झलकियाँ तथा विभिन्न कार्यालयी चित्रों ने पत्रिका को और भी निखारा है। पत्रिका भविष्य में निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्ही शुभकामनाओं के साथ अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

पत्रिका के सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को बहुत–बहुत बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए बहुत–बहुत शुभकामनाएं।

भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
जम्मू व कश्मीर तथा लद्दाख, जम्मू–180001

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित वार्षिक हिन्दी पत्रिका "हिमज्योति" के दशम् अंक की प्राप्ति हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं। साथ ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षणीय है। कविताएँ एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। श्री विनोद कुमार शर्मा द्वारा रचित लेख *"महामारी का अपूर्व संकट"*, श्री विक्रांत कुमार द्वारा रचित कविता *"भारत भाग्य विधाता"*, श्री अजय कुमार पाल द्वारा रचित कविता *"जिजीविषा"*, श्री महावीर प्रसाद द्वारा रचित कविता *"खुद को सुरक्षित रखना"*, श्री शिवम लिल्हौरी *"बानगी"* द्वारा रचित लेख *"दूनी तुकबंदी–बारिश और चाय"* व कविता *"बेजुबान आँसू"*, डॉ0 दिनेश शर्मा द्वारा रचित कविता *"चाँद"* सर्वाधिक रोचक एवं शिक्षाप्रद हैं।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत–बहुत शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार, लेखापरीक्षा–II
पश्चिम बंगाल

आपके द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "हिमज्योति" के 10वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका के आवरण पृष्ठ पर छायांकित छायाचित्र एवं अन्य कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र काफी अच्छे लगे। संकलित समस्त लेख एवं रचनाएँ सरस एवं पठनीय हैं। श्री विनोद कुमार शर्मा का लेख *"महामारी का अपूर्व संकट"*, श्री विक्रांत कुमार की कविता *"भारत भाग्य विधाता"*, श्री अजय कुमार पाल की कविता *"राष्ट्रभाषा हिन्दी"*, डॉ0 दिनेश शर्मा का लेख *"डिजिटल क्रांति का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव"* एवं श्रीमती पूजा त्रिपाठी की कविता *"मेघ निर्घोष बनकर आया"* आदि काफी रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं।

पत्रिका के कुशल सम्पादन हेतु हार्दिक बधाइयाँ। कार्यालय परिवार पत्रिका की अविरल प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) – प्रथम
उ0प्र0, इलाहाबाद

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के अंतर्गत आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "हिमज्योति" के 10वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में संकलित हिंदी भाषा के प्रति महान दार्शनिकों के अनमोल विचार प्रशंसनीय एवं प्रेरणादायी हैं। "महामारी का अपूर्व संकट", "खुद को सुरक्षित रखना", "कोरोना वायरस" आदि लेख कोरोनामुक्त भारत अभियान को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। "खयालों के भंवर" कविता में वर्णित "आंगन", "मां की गोद", "फुटपाथ के पलंग", "हाथ में कटोरा", "घूंघट", "चांदनी की चादर तले" जैसे शब्द स्पष्ट एवं कोमल अनुभूतियों को यथार्थ की कसौटी पर कसकर व्यक्त करते हैं।

आशा करता हूँ कि आपकी पत्रिका "हिमज्योति" नई चेतना एवं नये विचार से समाज को उत्कृष्ट बनाने में अपना योगदान देती रहेगी। "हिमज्योति" परिवार को पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं कुशल संपादन के लिए "गोमती" परिवार की ओर से ढेर सारी शुभकामनाएं।

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का कार्यालय,
त्रिपुरा, अगरतला

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार हेतु प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका "हिमज्योति" के दशम् अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। रचनात्मकता से परिपूर्ण पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत ही मनोरम व मनमोहक है। "बचपन", "भारत भाग्य विधाता", "आपदा", "नज्म", "सफर", आदि रचनाएँ रुचिकर एवं सराहनीय ही नहीं बल्कि संग्रहणीय भी हैं। अन्य सभी रचनाएँ भी पठनीय एवं विचारणीय हैं।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी।

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, कर्नाटक,
भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग

कटा पत्थर, डाकपत्थर, विकासनगर देहरादून
छायाचित्र – नील चटर्जी पुत्र श्रीमती पूर्णिमा चटर्जी (पर्यवेक्षक)

अनुक्रमणिका

विधा	विषय वस्तु	रचनाकार	पृ0क्र0
कविता	मनुष्य की ईश्वर को पुकार	श्री संदीप सिंह	15
लेख	कार्य में सरल हिन्दी के प्रयोग की आवश्यकता	श्री वी0के0 शर्मा	16
कविता	गाँव	श्री प्रशान्त जोशी	17
लेख	योग से रहें निरोग	श्री सरदार सिंह तोमर	18
गजल	गजल	श्री सुशील देवली	20
कविता	इन्द्रधनुष	श्रीमती पूजा त्रिपाठी	20
कविता	झुमका	श्री शिवम लिल्हौरी	21
यात्रा संस्मरण	पंचाचुली की गोद में मुस्कुराता मुनस्यारी	श्री शिवम सिंह	22
कविता	कवि	श्री संदीप सिंह	24
कविता	जीवन सुख	श्री यशपाल सिंह	25
लेख	टोंस का निर्जलीकरण	डॉ0 दिनेश शर्मा	26
कविता	सबक	श्री संजीव जखमोला	28
कविता	विश्वास	श्री प्रशान्त कुमार	29
कविता	होली गीत	श्री अजय कुमार पाल	31
कविता	बिटिया का पहला जन्मदिन	श्रीमती मोनिका सिंह	32
लेख	“सूचना” प्रदान करते समय बरती जाने वाली सावधानियाँ	श्री वी0 के0 शर्मा	33
कविता	खुद से गुफ्तगू	श्री अंशुल शुक्ला	36

अनुक्रमणिका

विधा	विषय वस्तु	रचनाकार	पृ0क्र0
कविता	प्रेम पत्र	श्री संदीप सिंह	37
कविता	प्रकृति	श्री शिवम लिल्हौरी	38
लेख	राजभाषा का हिन्दी स्वरूप	श्री भास्करानन्द त्रिपाठी	39
कविता	क्यों खुद से न हो प्रीत मुझे	श्रीमती दीपा पवार	41
कविता	खोये हुए खत	श्री संजीव जखमोला	42
कविता	कभी सोचता हूँ . . .	श्री अरविन्द सिंह रावत	44
लेख (व्यंग्य)	हैप्पी फादर्स डे	श्री नवीन कुमार अग्रवाल	45
कविता	गुलिस्तां	श्री यशपाल सिंह	46
कविता	वक्त	श्री प्रशान्त कुमार	47
कविता	चिरैया	श्रीमती पूजा त्रिपाठी	48
हास्य लेख	कोरोना डायरी	श्री शिवम लिल्हौरी	49
कविता	उन्मुक्त चाह	डॉ0 दिनेश शर्मा	51
कविता	जिंदगी का सबक	श्री विक्रान्त कुमार	52
यात्रा–वृत्तान्त	मनोकामना पूर्ण करती हैं बीं माता	श्री बृजभूषण सेमवाल	53
कविता	दिखावा	श्री अजय कुमार पाल	54
कविता	चन्दा मामा	श्री यशपाल सिंह	55

मनुष्य की ईश्वर को पुकार

संदीप सिंह,
प्रधान महालेखाकार

यह बहती हुई हवा
जाने क्या–क्या कह गयी,
        यह बेचारी मासूम लड़की
        जाने क्या–क्या सह गयी,
जाये तो वह कहाँ जाये
अब लौटकर भी नहीं सकते लौट,
        गाँवों में भरी है भूख
        शहरों में बेवजह मौत,
सावन उसे खींच लाया था
करके एक बेरहम वादा,
        जो भी तू चाहेगी
        उससे मिलेगा ज्यादा, और ज्यादा
तो फिर कैसा यह धोखा
कैसी झूठी यह लगन,
        बाहर यह महफिलें, यह मस्ती, यह नकाब
        अन्दर सब नीरस, निर्जीव, नग्न,
कैसा है, खुदा कैसा है
यह तेरा बेहोश करने वाला खेल,
        बाहर सागर, धरती, आकाश
        अन्दर रुसवाई सा संकुचित जेल,
तोड़ दे, तोड़ दे
यह अहंकार, यह ईर्ष्या का जाल,
        दे दे शरण सभी को ईश्वर
        दिखता है मुझे आता हुआ काल।

कार्य में सरल हिंदी के प्रयोग की आवश्यकता

विनोद कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखाधिकारी (सेवानिवृत्त)

यह सर्वविदित है कि अधिकांश लोग अपना प्रतिदिन का काम–काज हिंदी भाषा में करते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि जनसाधारण की भाषा हिंदी है। लेकिन सामान्यतया सरकारी कार्यालयों में प्रयोग की जाने वाली हिंदी तथा सामाजिक हिंदी में भिन्नता है। उक्त को दृष्टिगत रखते हुए सरकारी काम–काज में भी सरल शब्दों और वाक्यों का प्रयोग किया जाना अपेक्षित है। देश की दूसरी भाषाओं के ऐसे शब्द, जो कि जनमानस प्रयोग करते हैं, हिंदी भाषा को समृद्ध बनाने के लिए उन्हें ग्रहण करने की आवश्यकता है।

हिंदी में अनुवाद करते समय, विशेषकर ऐसे शब्द जो कि कठिन हैं तथा जनसाधारण द्वारा प्रयोग में नहीं लाये जाते हैं, से बचना चाहिए तथा हिंदी अनुवाद सरल भाषा में किया जाना चाहिए। वर्तमान में अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद की स्थिति के बारे में इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि उसमें सरल भाषा का अभाव होता है तथा अनुवाद के बाद उसका अभिप्राय समझने के लिए कई बार पुनः अंग्रेजी को पढ़कर उसका मतलब समझना पड़ता है। राजभाषा हिंदी के प्रचार एवं प्रसार के लिए यह आदर्श स्थिति नहीं कही जा सकती। आवश्यकता इस बात की है कि अनुवाद करते समय ऐसे सरल शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए जो कि आम जनमानस की समझ में आ सकें। इसमें कोई संदेह नहीं कि जनसाधारण की भाषा में सरकारी काम–काज करने से विकास की गति तीव्र होगी तथा आम जनता एवं प्रशासन के बीच की दूरी कम होने के साथ ही साथ प्रशासन के काम–काज में पारदर्शिता आएगी जो अन्ततः विकास को गति प्रदान करेगा।

हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए आवश्यकता इस बात की है कि कार्मिकों को हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया जाए। यह सही है कि हिंदी किसी पर थोपी नहीं जा सकती, अतः प्रेम एवं स्नेह के माध्यम से कार्मिकों को, विशेषकर अहिंदी भाषियों को, हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित किया जाए। प्रोत्साहन, पुरस्कार या प्रशंसा–पत्र के माध्यम से भी कार्मिकों को प्रोत्साहित किया जा सकता है। कार्मिकों के लिए हिंदी में कार्य करने हेतु उचित प्रशिक्षण की भी व्यवस्था की जानी चाहिए, जिससे कि हिंदी में कार्य करने की उनकी झिझक को दूर किया जा सके। हिंदी के प्रयोग एवं प्रचार–प्रसार के लिए प्रबन्धन इस प्रकार से किए जाने की आवश्यकता है, जिससे हिंदी के प्रसार एवं विकास की गति तीव्र होने के साथ ही साथ, निरंतर विकास की ओर अग्रसर हो। प्रबन्धन द्वारा यह विचार किया जाना चाहिए कि ऐसे कार्मिक जो कि राजभाषा में उल्लेखनीय कार्य करते हैं, उनका उत्साहवर्धन कैसे किया जाए? प्रबन्धन के स्तर से प्रतिबद्धता दर्शाते हुए ऐसा वातावरण बनाया जाना चाहिए, जिससे कि हिंदी में कार्य करने वाले कर्मचारियों का उत्साहवर्धन हो। इसके लिए शीर्ष अधिकारियों के स्तर से भी पत्रावलियों पर टिप्पणी हिंदी में लिखने के साथ ही सभी आदेश हिंदी में पारित किए जाने चाहिए। इससे निश्चित रूप से अन्य कार्मिकों का भी प्रोत्साहन होगा। उल्लेखनीय है कि राजभाषा हिंदी के प्रसार एवं विकास को गति प्रदान करना किसी एक का नहीं बल्कि हम सभी का कर्त्तव्य है और हमें राजभाषा हिंदी का प्रभावी कार्यान्वयन सफलतापूर्वक सुनिश्चित करने हेतु अपने स्तर से हर सम्भव प्रयास करना है। इस कार्य में और देरी न करते हुए इसे शीघ्रातिशीघ्र कार्यान्वित किए जाने की आवश्यकता है।

गाँव

प्रशांत जोशी
वरिष्ठ लेखाकार

मैंने सपने में अपने–आप को गाँव में पाया।
टूटे घरों, सूखे–खेतों का मंजर सामने आया।।
वह रास्ते अब लोगों से सुनसान हो गये।
घरों को छोड़कर गये, लोग अब मेहमान हो गये।।
वह पहाड़, हरियाली अपने पास बुलाती है।
अकेले होने पर, याद गाँव की आती है।।
चलो सभी शहरों से कभी–कभी गाँव हो आयें।
जीवन में शान्ति, सूकून व आनन्द को पायें।।

योग से रहें निरोग

सरदार सिंह तोमर
सहायक पर्यवेक्षक

योग, भारतीय संस्कृति की एक प्राचीन विद्या है जिसने मानव को शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के साथ–साथ मन की शान्ति के सन्दर्भ में भी रोशनी की ऐसी किरण प्रदान की है जिससे न केवल तनाव और थकान बल्कि बीमारी एवं अन्य समस्याओं का समाधान भी सम्भव है। योग पर सम्पन्न अनेक वैज्ञानिक शोधों ने यह साबित कर दिया कि आधुनिक जीवन में मानव को शारीरिक एवं मानसिक रूप से पूर्णतः स्वस्थ रखने में योग सर्वसक्षम है।

योग का अर्थ : योग संस्कृत के यज् धातु से बना है, जिसका अर्थ है–संचालित करना, सम्बद्ध करना, सम्मिलित करना अथवा जोड़ना। अर्थ के अनुसार विवेचन किया जाए तो शरीर एवं आत्मा का मिलन ही योग कहलाता है। यह भारत के छः दर्शनों में से एक है जिन्हें षड्दर्शन कहा जाता है। अन्य दर्शन हैं– न्याय, वैशेषिक, सांख्य, वेदांत एवं मीमांसा। इसकी उत्पत्ति भारत में लगभग 5000 ई0पू0 में हुई थी। पहले यह विद्या गुरू शिष्य परम्परा के तहत पुरानी पीढ़ी से नई पीढ़ी को हस्तान्तरित होती थी। लगभग 200 ई0पू0 में महर्षि पतंजलि ने योग दर्शन को योग सूत्र नामक ग्रन्थ के रूप में जीवित रूप में प्रस्तुत किया, इसलिए महर्षि पतंजलि को योग का प्रणेता कहा जाता है। आज योग नामक इस अचूक विद्या का देश–विदेश में प्रचार हो रहा है। भारत देश ने योग में विश्व प्रसिद्धि हासिल की है जिसके चलते 21 जून को विश्व योग दिवस सम्पूर्ण विश्व में मनाया जाता है।

योग के प्रकार : शास्त्र के अनुसार योग के पाँच प्रकार होते हैं (1) हठ योग (2) ध्यान योग (3) कर्म योग (4) भक्ति योग एवं (5) ज्ञान योग। हठ योग का सम्बन्ध प्राण से, ध्यान योग का सम्बन्ध मन से, कर्म योग का सम्बन्ध क्रिया से, भक्ति योग का सम्बन्ध भावना से एवं ज्ञान योग का सम्बन्ध बुद्धि से है। महर्षि पतंजलि ने योग–सूत्र में योग के आठ भागों का वर्णन किया है। योग के आठ अंग हैं (1) यम (2) नियम (3) आसन (4) प्राणायाम (5) प्रत्याहार (6) धारणा (7) ध्यान एवं (8) समाधि।

1. यम – अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह का पालन करना यम कहलाता है।

2. नियम – स्वाध्याय, सन्तोष, तप, पवित्रता और ईश्वर के प्रति चिन्तन इत्यादि को नियम कहते हैं।

3. आसन – सुविधापूर्वक एकाग्रचित्त होकर स्थिर होने की क्रिया को आसन कहा जाता है। पतंजलि के योग–सूत्र के अनुसार आसनों की संख्या 84 है, जिनमें सूर्य–नमस्कार, शीर्षासन, सर्वांगासन, कोणासन, पद्मासन, हलासन, धनुरासन, ताड़ासन, शवासन, भुजंगासन, मयूरासन, शलभासन, गोमुखासन, सिंहासन, मत्स्यासन, गरूड़ासन वज्रासन, स्वस्तिकासन, पर्वतासन, पश्चिमोत्तासन, चतुष्कोणासन, त्रिकोणासन इत्यादि कुछ प्रसिद्ध आसन हैं।

4. प्राणायाम – श्वास एवं निःश्वास की गति को नियन्त्रित कर रोकने व निकालने की क्रिया को प्राणायाम कहते हैं। प्राणायाम का शाब्दिक अर्थ प्राण का विस्तार है।

5. प्रत्याहार – इन्द्रियों के अपने भौतिक विषयों से हटकर चित्त में रम जाने की क्रिया को प्रत्याहार कहा जाता है।

6. धारणा – चित्त को किसी एक विचार में बाँध लेने की क्रिया को धारण या धारणा कहते हैं।

7. ध्यान – मन जिस वस्तु में रमा हो, उसी में इस प्रकार अपनी अन्तरात्मा को रमा देने की क्रिया जिसमें कोई भी वाह्य प्रभाव एकाग्रता को भंग न कर सके, ध्यान कहलाता है।

8. समाधि – ध्येय वस्तु के ध्यान में जब साधक इस तरह डूब जाता है कि उसे अपने अस्तित्व का भी ज्ञान नहीं रहता, तो ऐसी स्थिति को समाधि कहा जाता है।

योग एक कला है और सही अर्थों में योग एक बहुत ही उपयोगी अभ्यास है, जिसे करना बहुत आसान है और जो शरीर, मन और आत्मा को नियंत्रित करने में सहायता करता है। शरीर व मन को शान्त करने के लिए योग शारीरिक और मानसिक अनुशासन का सन्तुलन बनाता है। योग हमारे शरीर, मन और आत्मा को एकसाथ जोड़ता है और हमें शरीर से भी मजबूत बनाता है। इसलिए योग करना आवश्यक है। यह हमें फिट रखता है, तनाव व चिन्ता को कम करने में सहायता करता है, जिससे शरीर को आराम मिलता है। योग शरीर में लचीलापन और आत्मविश्वास की भावना विकसित करने के लिए भी जाना जाता है। योग के मुख्य लक्ष्यों में है – (1) शारीरिक स्वास्थ्य (2) मानसिक स्वास्थ्य (3) आध्यात्मिक सुख (4) सामाजिक स्वास्थ्य और (5) स्वयं का अहसास।

मशीनी निर्भरता : योग मनुष्य को अनेक बीमारियों से मुक्त रखता है, साथ ही उसमें बेहतर सोच एवं सकारात्मक ऊर्जा भी पैदा करता है। आज की इस भागदौड़ भरी जिन्दगी में विज्ञान की प्रगति के कारण मानव जीवन अब मशीनों पर निर्भर रहने लगा है। उसके लिए शारीरिक एवं मानसिक तौर पर स्वस्थ रहना किसी चुनौती से कम नहीं है। इसी मशीनी युग की निर्भरता एवं व्यस्तता के कारण मनुष्य तनाव, थकान, बीमारी इत्यादि का घर बनता जा रहा है। हालाँकि मनुष्य ने हर प्रकार की सुख सुविधाएं हासिल कर ली हैं और चिकित्सा एवं आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति के साथ अनेक बीमारियों पर विजय हासिल कर ली है, फिर भी हमारे सामने शारीरिक एवं मानसिक तौर पर स्वस्थ रहने की चुनौती ज्यों की त्यों बनी है।

दुश्वारियाँ अनेक, दवा बस एक : योग की व्याख्या से स्पष्ट है कि मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर योग का विकास किया गया था, क्योंकि योग का उद्देश्य शरीर, मन एवं आत्मा का योग अर्थात् सन्तुलित जुड़ाव स्थापित करना होता है। उस सन्तुलन बिन्दु पर आत्मिक सन्तुष्टि, शान्ति एवं चेतना का अनुभव होता है। योग शरीर को शक्तिशाली एवं लचीला बनाए रखता है, साथ ही तनाव से भी छुटकारा दिलाता है। योग शरीर के जोड़ों एवं मांसपेशियों को मजबूत बनाता है। शारीरिक विकृतियों को काफी हद तक ठीक करता है, शरीर में रक्त–प्रवाह के साथ पाचन–तन्त्र को मजबूत बनाता है। इसके अतिरिक्त शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाता है और कई प्रकार की बीमारियों जैसे – अनिद्रा, तनाव, थकान, उच्च रक्तचाप, चिन्ता इत्यादि को दूर करता है तथा शरीर को ऊर्जावान बनाए रखता है। यदि योग से होने वाले मानसिक स्वास्थ्य के लाभ पर गौर करें, तो पता चलता है कि यह मन को शान्त एवं स्थिर रखता है। तनाव को दूर कर सोचने की क्षमता, आत्मविश्वास तथा एकाग्रता को बढ़ाता है। इसलिए योग सभी के लिए लाभदायक है।

रोजगार का उत्तम साधन : हर आयु वर्ग के स्त्री–पुरुष योगाभ्यास कर सकते हैं, परन्तु योग की जटिलताओं को देखते हुए योग प्रशिक्षक का साथ होना आवश्यक है अन्यथा इससे लाभ के स्थान पर हानि भी हो सकती है। इसके अलावा, प्रगति के साथ आए प्रदूषण ने मानव का जीवन दूभर कर दिया है तथा उसके सामने स्वास्थ्य सम्बन्धी अनेक समस्याएं हैं, तब ऐसी परिस्थिति में योग मानव के लिए अत्यन्त लाभकारी साबित हो रहा है। यही कारण है कि योग ने वैश्विक बाजार में अपनी अभूतपूर्व उपस्थिति दर्ज कराई है। पश्चिमी देशों में इसके प्रति आकर्षण को देखते हुए यह रोजगार का एक उत्तम साधन बन चुका है। भारत में भी लगनशील छात्र–छात्राओं के लिए योग के क्षेत्र में रोजगार की अपार सम्भावनाएँ उपलब्ध हैं।

स्वास्थ्य : चूँकि आजकल जीवन बहुत तनावपूर्ण है और हमारे आस–पास बहुत प्रदूषण है, यह कई स्वास्थ्य समस्याओं का कारण है। अतः मनुष्य प्रतिदिन सिर्फ 20–30 मिनट का योग करके स्वयं को एक बेहतर जीवन दे सकता है, जिनमें से प्रमुख निम्न हैं–

सक्रियता : आजकल लोग आलस्य, थकान या नींद की कमी महसूस करते हैं, जिसके कारण वे अपने जीवन में अधिकतर मौजमस्ती से चूक जाते हैं और अपने काम को सही ढंग से पूरा करने में सक्षम नहीं हैं। योग शरीर में ऊर्जा का संचार करता है।

लचीलापन : लोग आजकल कई प्रकार के दर्द से ग्रस्त हैं। वे पैर की उँगलियों को छूने या नीचे की ओर झुकने के दौरान कठिनाइयों का सामना करते है जिसमें योग से राहत मिलती है।

रक्त प्रवाह बढ़ाए : योग आपके दिल को स्वस्थ बनाने में मदद करता है और आपके शरीर और नसों के रक्त के प्रवाह को बढ़ाकर अधिक कुशलता से काम करता है। यह आपके शरीर को आक्सीजन युक्त रखने में भी मदद करता है।

ध्यान केन्द्रित करने की शक्ति : योग आपके शरीर को शान्त करने और आराम करने में मदद करता है, जिसके कारण तनाव कम होता है। आप अपने काम पर बेहतर केन्द्रित कर सकते हैं। योग ही एक मात्र उपाय है जिससे शरीर को स्वस्थ एवं निरोग रख सकते हैं।

योग के प्रमुख लाभ

(1) योग बेहतर पाचन–तन्त्र प्रदान करता है (2) दिल सम्बन्धी समस्याओं का इलाज करने में मदद करता है (3) त्वचा के चमकने में मदद करता है (4) मधुमेह का इलाज करता है (5) अस्थमा का इलाज करता है (6) आन्तरिक अंग मजबूत करता है (7) मांसपेशियों के लचीलेपन में सुधार व मजबूती करता है (8) शरीर के आसन और एलाइनमेन्ट को ठीक करता है (9) एकाग्रता में सुधार करता है (10) शक्ति और सहन शक्ति को बढ़ावा देता है (11) मन और विचार के नियन्त्रण में मदद करता है (12) चिन्ता, तनाव और अवसाद को काबू कर मन शान्त रखता है (13) तनाव कम करने में मदद करता है (14) रक्त परिसंचरण और मांसपेशियों के आराम में मदद करता है (15) चोट से संरक्षण करता है (16) वजन घटाता है (17) शरीर में उपजी गाँठों को ठीक करता है (18) जोड़ों के दर्द को ठीक करता है (19) आँखों की रोशनी को बढ़ाता है (20) शारीरिक विकृतियों को काफी हद तक ठीक करता है (21) रोग–प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाता है (22) अनिद्रा, तनाव, थकान, उच्च रक्तचाप, चिन्ता से मुक्ति मिलती है (23) शरीर को ऊर्जावान बनाता है।

ग़ज़ल

सुशील देवली
सहायक लेखाधिकारी

मनचले परिन्दों से लगाव कैसा
भरोसा टूट जाए तो चुनाव कैसा
दोस्ती यारी में क्या नक़द क्या उधार
लिहाज़ा दोस्ती यारी में हिसाब कैसा
कोई सवाल नहीं था ऐ ज़िंदगी तुझसे
फिर बदले में ज़िंदगी से जवाब कैसा
रंगो खिज़ाब से कभी उम्र छिपी है भला
खामखाँ पकते बालों में फिर खिज़ाब कैसा

इंद्रधनुष

पूजा त्रिपाठी
पत्नी श्री नवीन त्रिपाठी
सहायक लेखाधिकारी

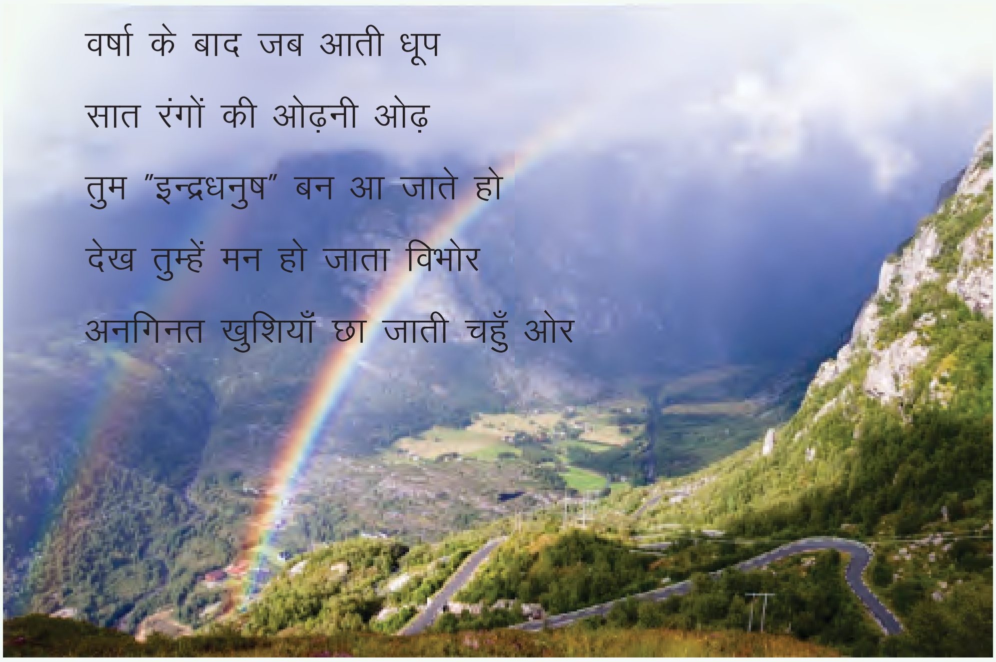

वर्षा के बाद जब आती धूप
सात रंगों की ओढ़नी ओढ़
तुम "इन्द्रधनुष" बन आ जाते हो
देख तुम्हें मन हो जाता विभोर
अनगिनत खुशियाँ छा जाती चहुँ ओर

झुमका

शिवम लिल्हौरी 'बानगी'
लेखाकार

जुल्फ़ों के साये में ऊँघते हुए,
मिन्नतें उँगलियों की ठुकराते हुए,
किलसते हुए बाहर आये तो
आईना देख के शर्माते हुए,
उन्हीं की तरह झुमका उनका,
कुछ–कुछ नखरें दिखलाते हुए।

हिलते डुलते इठलाते हुये,
सुर्ख लबों की शिकन को
लटों के झुरमुट से निहारते हुए,
शर्म से झुकी नज़रों के एवज़ में
झुमका उनका हामी भरते हुए।

लगे यूँ एक पल को थम जाएं,
फिर किसी डाली को पकड़ झूल जाएं
किसी खुशदिल नौनिहाल की तरह
झुमका उनका मनमाफ़िक करवाते हुए।

पंचाचुली की गोद में मुस्कुराता मुनस्यारी

शिवम सिंह
खंडीय लेखाधिकारी ग्रेड–II

यात्राएँ जिन्दा होने का एहसास कराती हैं और अगर इस एहसास को मन–मस्तिष्क में बसा लेने का इरादा हो तो कभी यूँ ही निकल जाना चाहिए, कुछ इस तरह कि मालूम न हो कि आखिर जाना कहाँ है। पहाड़ों में रहने का अपना एक अलग ही आनंद है। मैं हल्की सी बारिश के बाद अक्सर अनायास ही कोई राह पकड़ लेता हूँ। सड़क के किनारे लगे देवदार और चीड़ के जंगलों के पेड़ों की पत्तियाँ, तने, जड़ें भीगकर हवा में घुल जाते हैं। मैं लंबी–लंबी साँस लेकर जंगलों के बीच से आती इस ठंडी भीनी–भीनी खुशबू को फेफड़ों में भरकर पूरे रोम–रोम में महसूस करता हूँ।

ऐसे ही एक शाम की बात है कि सर्पीले रास्तों में रूकते–चलते बढ़ते गये। जब इल्म हुआ तो लगा कि काफी दूर आ गये हैं, अब लौट चलना चाहिए। पता करने पर मालूम हुआ कि मुनस्यारी कुछ चालीस–पचास किलोमीटर ही रह गया है। मन अचानक से उत्साहित हो गया। घड़ी ने बताया कि अगर चाह लिया जाए तो पंचाचुली के हिमाच्छादित चोटियों के नयनाभिराम दृश्य का अवलोकन किया जा सकता है। दो क्षण ही लगे कि गाड़ी उसी दिशा में दौड़ लगा चुकी थी।

घण्टे भर में मैं मुनस्यारी में था। दिन की अपेक्षा ठंड बढ़ चुकी थी। गीले रास्तों को देखकर लगता था कि थोड़ी देर पहले ही बारिश रूकी है। जैकेट में हाथ डाले, मुँह से भाप निकालते उद्‌देश्यरहित सड़कों पर चल दिए। पानी के गिरने–बहने की तेज आवाज आ रही थी। शायद पास में कहीं झरना था। कुछ देर की इकदिशीय चलाई के पश्चात् एक लकड़ी की बनी छोटी सी दुकान दिखी, जिसके भीतर एक बल्ब मद्धिम भाव में रोशनी करने का प्रयास कर रहा था। मैं सड़क के दूसरी ओर ठहर गया।

दुकान के सामने से गुटखा पान–मसाला की उर्ध्वाधर लड़ियाँ लटक रही थीं। मुझे ठहरा देख एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति पान–मसाला की लताओं को किनारे करते हुए बीच में प्रकट हुआ... और इशारे से पूछा – कुछ चाहिए? प्रश्न के पहले तक मै उद्‌देश्य रहित था पर प्रश्न के बाद मैंने मन को टटोला तो चाय की अदद इच्छा फूट पड़ी। उम्मीद से आगे जाकर चचा ने न जाने कहाँ से एक टोपा निकाला, जिसको देखकर यही लगता था कि टोपे का जन्म ही चाय निर्माण के लिए हुआ है और जिसको सहर्ष स्वीकार करते हुए टोपे ने चाय वाले सुनहरे भूरे रंग को भीतर से अंगीकार कर लिया था। आखिरी बार उसे कब ढंग से धोया गया था, ये चचा के साथ–साथ टोपे को खुद भी याद नहीं होगा।

भीतर से आती आवाज से लग रहा था कि चचा स्टोव में हवा भरना शुरू कर चुके थे। मैं वहीं रखे एक प्लास्टिक के स्टूल पर बैठ गया। थोड़ी देर में एक बिना हैण्डल वाला जग पकड़ाते हुए चचा बोले– जरा पानी लाओ तो। मुझे बड़ा अटपटा लगा। चचा जग थमाकर खुद पान–मसाले के पीछे फिर से अन्तर्धान हो चुके थे। मैंने आस–पास नजर घुमाकर देखा। सोच ही रहा था कि कहाँ से पानी लाना है कि चचा भीतर से ही बोले– आगे एक गदेरा है। मैं जग लिए ढलान पर उतरने लगा। दस कदम ही चला था कि झरने की आवाज तेज गूँजने लगी।

मैंने देखा की ऊपर कहीं पहाड़ से पेड़ों के बीच से होते हुए पानी की कई धारायें एकाकार हो छोटे–बड़े पत्थरों से टकराते हुए बह रही थीं। हल्की रोशनी में बहता हुआ पानी सफेद उज्ज्वल रंग में चमक रहा था। हाथ लगाया तो पानी बेहद ठण्डा था। फटाफट जग में पानी भरा और वापस चल दिया। जैकेट की बाँहें भीगने और जूते में पानी भर जाने से सिहरन हो रही थी। चाय की इच्छा और तेज हो चुकी थी। मैं फिर से उसी प्लास्टिक के स्टूल पर बैठ गया। चचा चाय बनाने में जुट चुके थे।

दिन ढल चुका था और शाम अँगड़ाई ले रही थी। दूर कहीं नेयोली बज रहा था। पर्वतों की शाम में परदेस गए अपने प्रियतम को याद करते हुए प्रेमिका गीत गाती है, जिसे नियोली कहते हैं। चलती हवा व झरने की आवाज के बीच गीत को सुनने का प्रयास कर रहा था। कुमाऊँनी के कुछ शब्द समझ न आते हुए भी गीत को महसूस कर पा रहा था। गीत में एक कसक थी, शब्दों में टीस थी और तान में एक सूनापन था, एक इंतजार था। सुनता जा रहा था। चाहता था कि ये अनवरत चलता रहे पर गीत अचानक रूक गया। शायद वो टीस, वो कसक, वो सूनापन पिघलकर दो बूँद बन गए थे, जिसकी नमी मेरे कपोलों पर भी बह रही थी।

इतने में चचा ने झटके से पान–मसाला की लड़ियों को हटाते हुए चाय का गिलास आगे कर दिया। मैंने गिलास थाम लिया। मैं पहली बार झरने वाली चाय पीने को लेकर उत्साहित था। हल्की सी फूँक के साथ ही चाय की चुस्की लेने लगा। शाम के धुँधलके में सामने पंचाचुली की चमकती बर्फ की आभा को आँखों में बसाना चाह रहा था। उतारना सरल है पर बसा लेना कठिन। चाय के खत्म होने तक बादलों ने पंचाचुली की चोटियों को अपने में छुपा लिया था और चचा दुकान समेटने में लग चुके थे।

रात्रि विश्राम के लिए पास के एक कॉटेज का चुनाव इस आधार पर किया गया कि कमरे की खिड़की से पंचाचुली की चोटियाँ दिखाई देती थीं। चाँद की दूधिया रोशनी में बर्फीली चोटियाँ ऐसे मालूम पड़ती हैं मानो दूध के ग्लेशियर हों। आसमान में हवा के साथ बादल इधर–उधर उड़े जा रहे थे। शहर की जलती हुई लाइट्स तारों के आकाश से जमीन पर उतर जाने का भ्रम पैदा कर रहीं थीं। अगली सुबह सूरज की प्रथम किरण का पंचाचुली की उत्तुंग चोटियों पर स्वर्ण की आभा का दृश्य देख वापसी हुई। चलते हुए देखा कि चचा एक बार फिर से अपनी दुकान खोलने की प्रक्रिया में थे।

संदीप सिंह,
प्रधान महालेखाकार

कवि

कवि का कर्त्तव्य, कवि का काम
छलकना जिन्दगी का भरा हुआ जाम,

उसका सार, स्रोत, उसकी सृष्टि
देना अन्धों को दूसरी दृष्टि,

वह मौन में जाता है
वह बसन्त की खबर लाता है,

सच तो वह अपनी रूह की
अपने खून अपनी खुशबू की गाता है,

वह दायरे तोड़ता है
वह तथ्य मरोड़ता है,

कवि बिगाड़ता नहीं
पर विपरीत को भी जोड़ता है,

उसका धर्म है प्यार
उसकी नफरत है दिल का व्यापार,

वह दिखाये रास्ता
जो ले जाये उस पार,

वह जलाये आत्मा में एक चिराग
धधक–धधक के बन जाये जो आग,

कहता वह, पागलों सोओ न
आयी सुबह की किरण, जागना है तो जाग।

जीवन सुख

यशपाल सिंह, 'यशी'
सहायक पर्यवेक्षक

तन को सुख दीजिये, मन को दीजिये मान,
देखिये जो आँखों दिखे, सुनिये जो सुने कान।

बिन देखे भ्रम न कीजिये, समझिये लगाकर ध्यान,
क्रोध बिन कारण न कीजिये, बिन सुने पूरी बान।

डर तब ही कीजिये, जब डरे आपके प्राण,
चिन्ता कभी न कीजिये, चिन्ता है विष समान।

अति तो न कीजिये, अत्यन्त होगा नुकसान,
मोह उतना कीजिये, जो बने दवा समान।

सोच–सोच मत खोइये, संकट में पड़ेंगे काम,
दवा भी उतनी खाइये, जिससे बच जाये प्राण।

दुख बहुत न कीजिये, दुख होगा जहर समान,
मेहनत भी खूब कीजिये, जिससे हो जाये उत्थान।

कर्ज कभी न लीजिये, कर्ज कोढ़ समान,
धीरे–धीरे तन गले, जीवन नरक समान।

अध्ययन खूब कीजिये, हो जाये आपका नाम,
इज्जत दूसरों को दीजिये, बढ़ जायेगा मान।

राज को परदा कीजिये, मिलेगा तभी सम्मान,
जीवन को रंग दीजिये, कि बन जाये पहचान।

आज का अभी कीजिये, कल का नहीं निदान,
जीवन व्यर्थ न खोइये, जीवन तरूवर समान।

टोंस का निर्जलीकरण

डॉ0 दिनेश शर्मा
सहायक लेखाधिकारी (तदर्थ)

देहरादून, गंगा और यमुना के बीच बसी हुई एक घाटी का शहर है। देहरादून जिले की पश्चिमी सीमाओं का निर्धारण यमुना नदी करती है और पूर्वी सीमा को गंगा नदी बनाती है। यमुना पार हिमाचल प्रदेश का सिरमौर है, तो गंगा पार उत्तराखण्ड का पौड़ी गढ़वाल। दूनघाटी की विशिष्ट ढलानों के चलते महज दो किलोमीटर की दूरी पर बहने वाली जलधाराएँ शहर के बीचोंबीच चलती हुई आश्चर्यजनक रूप से इन दो अलग–अलग नदियों की तरफ बढ़ती हैं और फिर गंगा–यमुना में मिलकर बहने वाली इन जलराशियों की परस्पर दूरियाँ यहाँ से सात सौ किलोमीटर बाद प्रयागराज के संगम पर खत्म होती हैं। इसलिए दूनघाटी से होकर गुजरने वाली जलधाराएँ अपने अलग–अलग गन्तव्यों की तरफ बढ़ती रहती हैं। दूनघाटी की द्रोणियों का यह रोचक जाल भू–विज्ञान की आरम्भिक समझ प्रदान करने के लिए रोचक उदाहरण है।

इन्हीं द्रोणियों में से एक छोटी पहाड़ी नदी 'टोंस' दून घाटी के पश्चिमी भाग से होकर गुजरती है। पहाड़ों की रानी मसूरी की तलहटी के विभिन्न स्रोतों और द्रोणियों से जल एकत्र करने वाली टोंस साल भर बहने वाली नदी है। इसी नदी के किनारे स्थित रोमांचक पर्यटन स्थल रोवर्स केव गर्मियों में पर्यटकों से गुलजार रहता है। थोड़ा–सा आगे चलकर बीजापुर बाँध में इसी नदी से सैन्य छावनी के लिए पेयजल और वन अनुसंधान संस्थान के वनों की सिंचाई के लिए जल की आपूर्ति होती है। फिर बीरपुर छावनी से आगे बढ़कर इस नदी के जल की आर्द्रता से टपकेश्वर की गुफा बरस भर रससिक्त रहती है और गुफा इसी जल से महादेव का निरन्तर अभिषेक करती है। भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग का कौलागढ़ स्थित नव–निर्मित भव्य भवन इसी नदी के किनारे स्थित है और वन अनुसन्धान संस्थान तथा भारतीय सैन्य अकादमी जैसे विश्वस्तरीय संस्थानों का सीमांकन करते हुए यह नदी मसन्दावाला और कोटड़ा सन्तूर से क्रमशः नून और नीमि जलधाराओं को साथ में लेकर आगे बढ़ती है और फिर आसन नदी के नाम से आसन बैराज के रास्ते भारत की पवित्र नदियों में से एक यमुना में जा मिलती है।

> **''नदी होने के लिए बरस भर बहना होता है, बरसात भर में बहना तो नाला होने की निशानी है''**

कई लोग इस टोंस को पौराणिक तमसा नदी से जोड़कर भी देखते हैं। यों तो पौराणिक कथानकों में तमसा के नाम से वर्णित नदी के साथ देश की अनेक नदियों का नाम जोड़ा जाता रहा है। लेकिन फिर भी पौराणिक तमसा यदि हिमालय से ही बहती रही हो तो मेरी समझ से यह उस टौंस नदी से अधिक संबद्ध है जो गढ़वाल से निकलकर देवभूमि उत्तराखण्ड और देवभूमि हिमाचल प्रदेश की सीमाओं का निर्धारण करते हुए आसन बैराज से थोड़ा पहले यमुना में जा मिलती है। उस टौंस की यमुना के जल में यमुना से अधिक हिस्सेदारी है। 'टोंस' और 'टौंस' का यह नामसाम्य प्रायः इनके एक होने का भ्रम उत्पन्न करता है।

खैर, फिलहाल 30 जून 2021 की शाम खींचा यह चित्र देखिए। आषाढ़ मास के सोलह दिन बीत चुके हैं और देहरादून में मानसून की आमद को भी इससे ज्यादा समय बीत चुका है। लेकिन आज शाम की सैर के दौरान कौलागढ़ के निकट बाजावाला गाँव के सामने इस नदी का विहंगम दृश्य देखकर मैं ठिठक सा गया। यह चित्र साफ बताता है कि नदी लगभग सूख चुकी है। ठहरे पानी को छोड़ दिया जाए तो प्रवाह नाममात्र भी शेष नहीं है। मैं विगत पाँच वर्षों से इस रास्ते से लगभग रोज गुजरता हूँ। इस स्थल को मैंने हर मौसम में देखा है लेकिन आज जैसा शुष्क दृश्य मेरी चिन्ता को बढ़ा रहा है। मुझे यह शुष्कता जलवायु परिवर्तन और भूमंडलीय तापीकरण के दुष्परिणामों की बानगी प्रतीत हो रही है। बात एकाध बरसात में इस नदी में जलागम की नहीं है, बल्कि यह लघु हिमालय में भूगर्भीय जल के बड़े स्रोतों के सूखने का संकेत भी हो सकता है।

मैं भाषा विज्ञान का छात्र रहा हूँ इसलिए भूगोल की बहुत ज्यादा समझ तो नहीं रखता हूँ लेकिन मुझे यह चित्र एक बड़े विनाश का संकेत लग रहा है। मुझे मालूम है कि इस बिन्दु से महज तीन किलोमीटर पर स्थित वाडिया संस्थान के भूगर्भवेत्ता इस संकेत की गंभीरता को लम्बे समय से महसूस कर रहे हैं और अनेक शोध और अनुसंशाओं के माध्यम से एक भयावह भविष्य से हमें आगाह करते रहे हैं लेकिन आज का यह दृश्य उन शोधों के अधिगम को प्रत्यक्ष दिखा रहा है। गौरतलब है कि देहरादून के पूर्वी किनारे में बहने वाली एक और नदी सुसुवा जो कि गंगा की सहायक नदी है, कुछ वर्ष पहले ही इसी तरह निर्जलीकरण के बाद विलुप्त हो चुकी है।

जब तक यह लेख प्रकाशित होगा, तब तक काफी बरसात हो चुकी होगी। इसी नदी के तट पर पत्रिका के विमोचन के समय नीचे नदी में जल बह रहा होगा। हम सब कार्यालय की खिड़की से इस टोंस को लबालब बहते देख रहे होंगे। लेकिन सत्य तो यह है कि बरसात में या उसके बाद भरकर चलना नदी की प्रवृत्ति नहीं होती, नदी होने के लिए बरस भर बहना होता है, बरसात भर में बहना तो नाला होने की निशानी है।

सबक

संजीव जखमोला
सहायक पर्यवेक्षक

दिलों में अपने परदे लगाकर रखना।
दोस्तों से भी खुद को बचाकर रखना।।

ना जाने कौन, कब यहाँ पराया हो जाये।
फूल एक दुश्मन के लिए भी बचाकर रखना।।

जिन्दगी के रास्ते कठिन हों तो अच्छा है।
आसां रास्तों पर पाँव जमाकर रखना।।

काँटो की चुभन एक सबक की तरह है।
कलियों से जरा दामन बचाकर रखना।।

वक्त गढ़ देता है कई दुश्वारियाँ।
चिराग आँधियों से बचाकर रखना।।

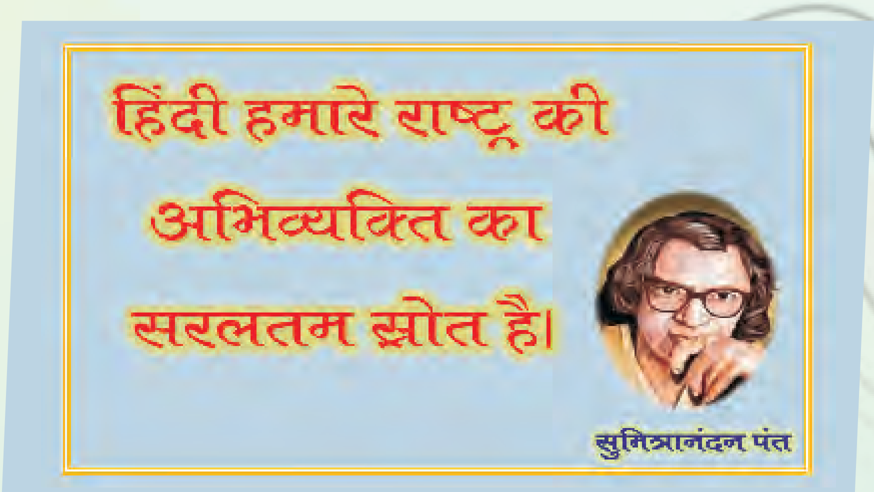

विश्वास

प्रशान्त कुमार
सहायक लेखाधिकारी (तदर्थ)

विश्वास विश्वास विश्वास
आखिर क्या है विश्वास!
कभी इस शब्द के मायने को समझकर देखा है?
समझना इतना आसान नहीं है,
इसको कभी लफ्जों से, शब्दों में उतरते देखा है?

विश्वास विश्वास विश्वास
आखिर क्या है विश्वास!
इसी विश्वास के नाम पर
रिश्तों को बनते और बिगड़ते देखा है,
हमनें सरे राह अपनों को अपनों से लड़ते देखा है!

विश्वास विश्वास विश्वास...
किस विश्वास के नाम की बात करते हो,
इस विश्वास के नाम पर हमने
लोगों के घर उजड़ते देखा है

विश्वास विश्वास विश्वास
आखिर क्या है विश्वास!
दो शब्द जो प्रेम के बोल दिये,
तो विश्वास झलक आता है
विश्वास के इस शब्द को
कभी टेढ़ा समझकर देखा है
साथ–साथ चलने की बातें तो बहुत करते हैं
लेकिन
अपने पैरों के निशां को कभी
अपने आप मिटते देखा है

विश्वास विश्वास विश्वास
आखिर क्या है विश्वास!
विश्वास जो कहें तो,
माँ की ममता में सबसे ज्यादा
गर आँच आये उस पे,
तो सारे जग से लड़ते देखा है
कलयुग की ये माता अपनों से गिड़गिड़ाये,
ममता भी बिक गयी है
कभी सोचकर देखा है?

विश्वास विश्वास विश्वास
आखिर क्या है विश्वास!
जरा सोच कर तो देखो
आसां है ये सब कहना,
औरों की छोड़ो
अपने दिल पे हाथ रखके कहना
सच बोलना है मुश्किल
औरों से कैसी आशा,
ताज्जुब हुआ ना अब तो
जब जवाब मिलते देखा है।
विश्वास विश्वास विश्वास
आखिर क्या है विश्वास!

अजय कुमार पाल
सहायक लेखाधिकारी (तदर्थ)

होली गीत

मन की मौजों को अपनी जगा लीजिए,
होली के रंगों का फिर मजा लीजिए,
नफरती ये धुँआ, जो बहुत है हुआ
होलिका के दहन में जला दीजिए
होली के रंगों का फिर मजा लीजिए

हर्ष का रंग हो, शरबती भंग हो
नाचते–झूमते, स्नेह का बिंब हो
फाग गाते हुए, रंग लगाते हुए
खेलती–कूदती टोलियाँ संग हो
मन मगन बाग में, फागुनी फाग में
होली के गीतों को, झूमती राग में
झूमते–झूमते गुनगुना लीजिए
होली के रंगों का फिर मजा लीजिए

रागरंजन भी हो, मनोरंजन भी हो
खुशबुओं से भरा, स्वाद–व्यंजन भी हो
हृदय की थाल से, अबीर और गुलाल से
एक दूजे का फिर अभिनंदन भी हो
मेल–उल्लास को, मधुर एहसास को
प्रीति की फिर उमड़ती मधुर प्यास को
अपने–अपने दिलों में बढ़ा लीजिए
होली के रंगों का फिर मजा लीजिए

नेह की फुहार हो, बन्धुता प्यार हो
सरस सुर–तालों का भी सरोकार हो
ढोल की तरंग से, मजीरे व मृदंग से
वाद्य यंत्रों की भी प्यारी झनकार हो
झनकते इस साज को, ऐसे अंदाज को
रस में डूबी हुयी, ऐसी आवाज को
स्वर से स्वर में सभी की मिला लीजिए
होली के रंगों का फिर मजा लीजिए

बिटिया का पहला जन्मदिन

मोनिका सिंह,
सहायक लेखाधिकारी (तदर्थ)

मेरी प्यारी बिटिया जब से तू है जीवन में आई,
मिट गई जैसे मेरी सारी तन्हाई।

अद्भुत था वो क्षण, अविस्मरणीय है वो पल,
जब तू मेरे सामने आई।।

इतना सामान्य भी नहीं था, तुझे पाने का मेरा ये सफर,
और मेरी परीक्षा लेने में ऊपर वाले ने ना छोड़ी थी कोई कसर।।

यूँ तो आज भी मेरा जीवन उतना सामान्य नहीं,
पर तेरा साथ होना भी कोई सामान्य बात तो नहीं।।

कैसे बताऊँ तुझे कि कितना सुकून मिलता है,
तुझे सुकून से बड़ा होता देखने में
और देखते ही देखते तू आज एक वर्ष की हो गई।।

मेरी ये सीख तू सदा याद रखना,
जीवन में आए कितनी भी बाधा, पर तू कभी ना रूकना।।

मैं तेरे साथ हूँ सदा, ये सोचना और निडर हो आगे बढ़ जाना।
कैसे करूँ मैं तेरा शुक्रिया मेरी गुड़िया, मेरे जीवन में आने के लिए,
और मुझे अपनी माँ बनाने के लिये।।

प्यारी बिटिया– पहले जन्मदिन पर

‘सूचना’ प्रदान करते समय बरती जाने वाली सावधानियाँ

विनोद कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखाधिकारी (सेवानिवृत्त)

किसी भी स्वरूप में कोई भी सामग्री ‘सूचना’ है। इसके अंतर्गत किसी इलैक्ट्रानिक रूप में धारित अभिलेख, दस्तावेज, ज्ञापन, ई–मेल, मत, सलाह, प्रेस विज्ञप्ति, परिपत्र, आदेश, लॉग–बुक, संविदा, रिपोर्ट, कागज–पत्र, नमूने, मॉडल, आँकड़े सम्बन्धी सामग्री और किसी निजी निकाय से सम्बन्धित ऐसी सूचना सहित, जिस तक तत्समय किसी अन्य विधि के अधीन किसी लोक प्राधिकारी की पहुँच हो सकती है, ‘सूचना’ की परिभाषा के अन्तर्गत आती है।

सूचना का अधिकार अधिनियम–2005 के अंतर्गत सूचना प्राप्त करने के लिए लिखित में या इलैक्ट्रानिक युक्ति के माध्यम से अंग्रेजी या हिंदी में या उस क्षेत्र की, जिसमें आवेदन किया जा रहा है, राजभाषा में ऐसी फीस के साथ, जो विहित की जाए, अनुरोध किया जा सकता है। अधिनियम के अंतर्गत सूचना सम्बन्धी आवेदन पर कार्यवाही आवेदन शुल्क का भुगतान करने पर प्रारम्भ की जाएगी। उक्त सम्बन्ध में सूचना प्रदान करने हेतु निर्धारित 30 दिन की समय सीमा भी आवेदन शुल्क का भुगतान करने पर ही प्रारम्भ होगी।

उपरोक्त संबंध में उल्लेखनीय है कि सूचना के लिए अनुरोध ऐसी सूचना के लिए किया जा सकेगा जो अधिनियम की धारा 2 के खण्ड (च) अधीन ‘सूचना’ परिभाषित है और लोक प्राधिकारी की अभिरक्षा एवं नियंत्रण में है।

सूचना हेतु शुल्क :– सूचना का अधिकार अधिनियम–2005 की धारा 6 की उपधारा (1) के अधीन सूचना अभिप्राप्त करने हेतु आवेदन–पत्र के साथ संदेय रू० 10/– मात्र का शुल्क नकद या डिमाण्ड ड्राफ्ट, बैंकर्स चैक या भारतीय पोस्टल आर्डर के माध्यम से संदाय किया जा सकेगा।

अधिनियम की धारा 7 की उपधारा (3) के अधीन वांछित अतिरिक्त सूचना की लागत के रूप में शुल्क उपर्युक्त माध्यम से संदाय किया जा सकता है।

तृतीय पक्ष से सम्बन्धित सूचना :– तृतीय पक्ष से अभिप्राय आवेदक से भिन्न अन्य व्यक्ति से है। यदि केन्द्रीय लोक सूचना अधिकारी तृतीय पक्ष से सम्बन्धित सूचना को प्रकट करना उचित समझते हैं, तो ऐसी दशा में अनुरोध–पत्र की प्राप्ति के पाँच दिन के अंदर तीसरी पार्टी को लिखित रूप से सूचित किया जाना चाहिए। तृतीय पक्ष को लिखित या मौखिक रूप से सूचना के प्रकट करने या न करने के सम्बन्ध में अपना पक्ष रखने हेतु अनुरोध किया जाना चाहिए। तृतीय पक्ष को प्रस्तावित प्रकटन के विरूद्ध प्रतिवेदन करने के लिए नियमानुसार अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। तृतीय पक्ष को प्रस्तावित प्रकटन के विरूद्ध प्रतिवेदन करने के लिए दस दिन का समय प्रदान किया जाना चाहिए।

लोक सूचना अधिकारी के स्तर से यह अपेक्षित होता है कि वह तृतीय पक्ष के निवेदन को दृष्टिगत रखते हुए प्रकटन के सम्बन्ध में निर्णय लें। ऐसा निर्णय सूचना के अनुरोध–पत्र की प्राप्ति से चालीस दिन के भीतर ले लिया जाना चाहिए। ऐसी स्थिति में तृतीय पक्ष को धारा 19 के अन्तर्गत अपील प्रस्तुत करने का अवसर भी प्रदान किया जाना चाहिए।

किसी व्यक्ति की ऐसी सूचना जो 'व्यक्तिगत सूचना' से सम्बन्धित है, जिसका प्रकटन किसी लोक क्रियाकलाप या लोक हित से सम्बन्ध नहीं रखता है या सूचना का प्रकटन व्यापक लोक हित में नहीं है, जिसका प्रकटन किसी व्यक्ति की निजता का अनावश्यक अतिक्रमण होगा, तब अनुरोधकर्ता द्वारा माँगी गई सूचना के प्रकटन हेतु नोटिस जारी किया जाना अपेक्षित नहीं है।

यह आवश्यक है कि तृतीय पक्ष से सम्बन्धित सूचना को प्रकट करने या न करने के मामलो में निर्धारित मार्गदर्शी सिद्धान्त का पालन करते हुए अधिनियम में उल्लिखित प्रक्रिया अपनायी जानी चाहिए।

उपर्युक्त के साथ ही सूचना प्रदान करने हेतु प्राप्त अनुरोध–पत्रों का निस्तारण करने से पूर्व निम्नलिखित महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर भी ध्यान दिया जाना अपेक्षित है :–

(i) सूचना हेतु अनुरोध–पत्र प्राप्त होने पर यह जाँच कर लेना चाहिए कि अनुरोध–पत्र के साथ निर्धारित शुल्क का नियमानुसार भुगतान किया गया है या नहीं ?

(ii) सूचना हेतु अनुरोध पत्र किस प्राधिकारी को सम्बोधित किया गया है अर्थात वह केंद्रीय लोक सूचना अधिकारी को सम्बोधित किया गया है या अपीलीय प्राधिकारी को। इसके साथ ही यह भी देखा जाना चाहिए कि क्या माँगी गई सूचना आपके कार्यालय से ही सम्बन्धित है या सम्बन्धित अनुरोध–पत्र को किसी अन्य कार्यालय/प्राधिकारी को अन्तरण की आवश्यकता तो नहीं है।

(iii) सूचना के अनुरोध पत्र में वांछित सूचना के लिए अतिरिक्त शुल्क की माँग किया जाना अपेक्षित है या नहीं।

(iv) माँगी गई सूचना 'तृतीय पक्ष' से सम्बन्धित तो नहीं है? तृतीय पक्ष से सम्बन्धित सूचना होने पर नियमानुसार कार्यवाही की जानी चाहिए।

(v) सूचना प्रदान करने हेतु प्राप्त अनुरोध–पत्र में कितने बिन्दुओं पर सूचना माँगी गई है? उक्तानुसार ही अनुरोधकर्ता द्वारा वांछित सभी बिन्दुओं पर बिन्दुवार सूचना प्रदान की जानी चाहिए।

(vi) सूचना के अनुरोध–पत्र की प्राप्ति तिथि तथा निर्धारित 30 दिन की अवधि पूर्ण होने की तिथि को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

(vii) सूचना अनुरोधकर्ता द्वारा यदि छायाप्रतियों की माँग की गई है तो, सूचना प्रेषित करते समय संलग्नकों का स्पष्ट उल्लेख किया जाना चाहिए।

(viii) सूचना को उपलब्ध कराते समय यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि अनुरोधकर्ता द्वारा वांछित सभी छायाप्रतियाँ संलग्न की गई हैं तथा यदि प्रमाणित प्रतियों की माँग की गई है तो वह प्रमाणित करने के पश्चात् ही उपलब्ध करायी जा रही हैं।

(ix) प्रथम अपीलीय प्राधिकारी का नाम, पदनाम, पता, दूरभाष तथा ई–मेल आई0डी0 का नियमानुसार उल्लेख किया जाना चाहिए। इसके साथ ही प्रथम अपील, यदि कोई हो, तो कितने दिन की अवधि के भीतर की जा सकती है, इसका भी उल्लेख किया जाना चाहिए।

(x) प्रथम अपीलीय प्राधिकारी के स्तर से आदेश जारी करते समय द्वितीय अपीलीय प्राधिकारी के पते का भी उल्लेख किया जाना अपेक्षित है।

उत्तराखण्ड का राज्य पक्षी – मोनाल

खुद से गुफ्तगू

अंशुल शुक्ला
बहुकार्यकर्मी

निकल जाएँगी, निकल जाएँगी
ये आँधियाँ भी निकल जाएँगी।
तू खड़ा रह बीच समंदर में डट के,
इनकी क्या मजाल कि तेरी कश्तियाँ डूबा पाएंगी।
कि अगर तूने ठान लिया, कुछ कर गुजरने का
दुनिया की कोई भी ताकत, तुझे रोक न पायेगी।
और सुन, मत दे ध्यान इस आलम पर
इनकी हस्ती नहीं, कि तुझे हिला भी पायेंगी।
अगर है तुझमें तलब, बनने का शहरयार
तो रख अकीदा खुद पे
रफ्ता–रफ्ता करके, तेरी मुराद ही तुझे मंजिल तक पहुँचायेगी।
करार कर इक खुद से, कि हिज्र है उन से सब
जो कह रहे थे, कह रहे हैं
तुझसे ना हो पायेगा।
तू लिखेगा हिकायत, खुद की खुद से।
अगर है शरर तुझमें, तो उठ
फैला दे अपनी कशिश और हासिल कर ले वो मुकाम।

संदीप सिंह,
प्रधान महालेखाकार

प्रेम पत्र

हवा बनती है लहर
दवा बनती है जहर,

जब मुस्करा के इठला के
तुम ढा देते हो आँखों का कहर,

तुम्हारी रूह जैसे साफ दर्पण
तुम्हारी खुशबू जैसे चन्दन,

कोई बाँधे तो कैसे न बाँधे
तुमसे जन्मों का बन्धन,

जुल्फ छिटकाने से बादल बिखर जाये
ओंठ दबाने से सावन निखर जाये,

हो तुम्हारा साथ तो कोई शिखर
जिन्दगी भर सजाये,

पर है यह शायद वक्त का सितम
कि मिल न पाये, खिल न पाये हम इस जनम,

तब क्या, मिलेंगे जरूर वहाँ जहाँ रात दिन में सँवर जायेगी
जहाँ चाँद सितारे दोनों जायेंगे थम,

क्योंकि यह मेरी हृदय की आवाज है
क्योंकि यह प्रेम का रहस्य, राज है,

मिलना तो पड़ेगा हमें एक राह पर
क्योंकि मैं सुर तू मेरा साज है।

शिवम लिल्हौरी 'बानगी'
लेखाकार

प्रकृति...

प्रकृति की गोद में पले–बढ़े
हम पर उसके उपकार बड़े,
देकर जीवन का वरदान हमें
खुद मोल लिए खतरे बड़े।

दिनकर ने धरा गरमाई
वृक्षों से प्राण वायु दिलाई,
धरती माँ ने पेट भरा
नदियों ने प्यास बुझाई।।

प्रदूषण का करके विस्तार
प्राणियों पर किया अत्याचार,
जल से लेकर धरती–आकाश
मनुष्य ने मचा दिया हाहाकार।

काट दिए जंगल हरे–भरे
चिड़ियाँ ना अब कहीं कलरव करें,
जानवरों की नस्लें करके तबाह
बढ़ चले हम इंसानियत से परे।।

वादियों में छुट्टियाँ बिताईं
समुंदर किनारे नापी गहराई,
जगह–जगह कूड़ा करकट फैला
हमने कहाँ की समझदारी दिखाई।

लालच बहुत बुरी बला भाई
बात क्यूँ समझ ना आई?,
वक़्त रहते ना सँभले जो
प्रकृति वसूलेगी मोटी भरपाई।।

राजभाषा हिन्दी का स्वरूप

श्री भास्करानन्द त्रिपाठी
वरिष्ठ लेखाधिकारी (सेवानिवृत्त)

आओ सब मिलकर हिन्दी दिवस मनायें
कुछ कविता, कुछ गीत सुनायें
भाषा जिसकी जो भी हो
उसे आज हिन्दी में गायें।

शायद भारत ही एकमात्र ऐसा देश है जिसे अपनी राजभाषा के उन्नयन व उत्थान के लिए 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाना पड़ता है। इस वार्षिक पर्व को मनाने के लिये सरकारी/अर्धसरकारी विभागों में वित्तीय आवंटन होता है। पोस्टर व पैम्पलेट लगाये जाते हैं। सप्ताह व पखवाड़ों का आयोजन होता है। सभी कर्मचारी सप्ताह या पखवाड़े भर हिन्दी में कार्य करते हैं। कार्यालयों में उत्सव का माहौल होता है। कवितायें, चुटकले सुनाये जाते हैं। प्रतियोगिताओं का आयोजन होता है। मिठाइयाँ भी बाँटी जाती हैं। उत्सव मनाया जाता है। मनायें भी क्यों नहीं? 14 सितम्बर हिन्दी का जन्मदिन रहा होगा। शायद इसी खुशी को विभिन्न रूपों में मनाया जाता है। हिन्दी का यशोगान करने के लिये शेष 364 दिन कम हैं क्या? भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जो हिन्दी साहित्य के पुरोधा कहे जाते थे, वे भी हिन्दी भाषा के प्रति चिन्तित थे, वे भी हिन्दी की धीमी प्रगति और मिलावट के प्रति रोते–बिलखते हुये हिन्दी का स्यापा इस प्रकार करते हैं –

आवहुः सब मिल–जुल के
रोवहु हिन्दी भाई।
हा–हा। हिन्दी दुर्दशा
हमसे तो देखी नहीं जाई।।

सवाल यह है कि, रोने व स्यापा करने के लिये भारतेन्दु जी ने केवल हिन्दी भाइयों को ही क्यों बुलाया, सारे भारतवासियों को क्यों नहीं बुलाया? हिन्दी तो राजभाषा है, फिर हिन्दी भाई ही क्यों रोये? लगता है उनको भी औरों से उम्मीद न रही होगी। इसीलिये हिन्दी भाइयों से आग्रह किया होगा।

14 सितम्बर को केवल सरकारी/अर्धसरकारी संस्थायें ही हिन्दी का रोना नहीं रोती हैं बल्कि हिन्दी अखबार भी स्यापा करते हैं। कुछ अखबार कहते हैं, हाय हिन्दी तेरा क्या होगा? कुछ कहते हैं हाय हिन्दी। उस दिन हम न हुये, जिस दिन लॉर्ड मैकाले ने तुम्हें मारने का षडयन्त्र रचा था। कुछ हिन्दी अखबार व पत्र–पत्रिकायें 14 सितम्बर को सामूहिक विलाप या शुद्ध हिन्दी में कहें तो समेकित प्रलाप का दिन बतायेंगे, कुछ अखबार इसे हिन्दी उत्सव के तौर पर दर्शायेंगे। हम चाहे उत्सव मनायें या विलाप करें, इसके पीछे कोई तो कारण निहित है। इस विलाप अथवा प्रलाप के कारणों को हम अपने ही भीतर ढूँढ़ने का प्रयास करते हैं।

कबीर कहते हैं कि–

"बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय,
जो दिल खोजा आपणो मुझसा बुरा न कोय।।"

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 344(1) एवं 344(4) के अनुसार सन् 1955 में राजभाषा आयोग की 30 सदस्यीय समिति का गठन हुआ। सन् 1959 में इस समिति ने अपनी संस्तुतियाँ प्रस्तुत कर दी थी। भारत के नियन्त्रक एवं महालेखापरीक्षक के नियन्त्रणाधीन स्थानीय कार्यालयों के लिये जो संस्तुतियाँ की गयीं वे इस प्रकार थीं–

"भारत के नियन्त्रक एवं महालेखापरीक्षक के नियन्त्रण में कार्य करने वाले भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के वे कर्मचारी जो कि राज्यों के साथ व्यवहार करते हैं, सम्बद्ध राज्य की भाषा पर अधिकार प्राप्त कर लें, जिससे वे लेखे तैयार करने में अपने कर्तव्यों को निभा सकें। इसका तात्पर्य यह है कि किसी राज्य में स्थित महालेखाकार कार्यालय इस योग्य होना चाहिये कि वह प्रादेशिक भाषा में प्राप्त लेखों के विवरणों को संकलित करने और प्रादेशिक भाषाओं में अंकित टिप्पणियों का प्रशासनिक निर्णयों के अनुसार लेखांकन व लेखापरीक्षा कर सकने में समर्थ हो"

संसदीय समिति की उक्त अनुशंसा को स्वीकार कर लिया गया। यह अनुशंसा क्षेत्रीय कार्यालयों (महालेखाकार कार्यालय) में कर्मचारियों की नियुक्ति में प्रान्तीयता की ओर इशारा करती है जबकि महालेखाकार कार्यालयों में नियुक्ति संरचना अखिल भारतीय स्तर की है।

उच्च स्तर के समस्त अधिकारी अखिल भारतीय स्तर के होने के कारण वे स्वयं को अंग्रेजी भाषा के साथ अधिक सहज पाते हैं जबकि निचले स्तर पर भी कर्मचारियों में प्रान्तीयकरण का पूरा–पूरा उपयोग नहीं होता है। यही कारण है कि हिन्दीभाषी क्षेत्रों में न चाहते हुये भी अंग्रेजी भाषा स्वतःस्फूर्त तरीके से पनपती रहती है। यदि नियुक्तियों में प्रान्तीयकरण की सिफारिश को पूर्ण रूपेण लागू कर दिया जाये तो अनुवादकों की आवश्यकता नहीं रहेगी।

हिन्दी भाषा को जीवित रखने में उन राज्यों के कर्मचारियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है जो राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा (3) के अन्तर्गत "क" श्रेणी के क्षेत्रों में आते हैं, जिसमें राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, उत्तराखण्ड, मध्यप्रदेश, बिहार व हिमाचल प्रदेश मात्र आठ राज्य हैं। जबकि शेष राज्यों में हिन्दी, द्वितीयक अथवा औपचारिक मात्र है। अतः अखिल भारतीय स्तर पर मात्र एक–चौथाई राज्य ही हिन्दी के लिए एड़ी–चोटी का जोर लगाये बैठे हैं जबकि तीन–चौथाई राज्यों में हिन्दी प्रभावी रूप से उपयोग में नहीं लायी गयी है।

हिन्दी राजभाषा होते हुये भी "ख" तथा "ग" दोनो के लिये बाध्यकारी नहीं है। इससे यह स्पष्ट है कि राजभाषा का स्वरूप अखिल भारतीय न होना, हमें हिन्दी दिवस, सप्ताह अथवा पखवाडों की ओर ले जाता है। सभवतः आने वाले दिनों में विभिन्न सामाजिक सूचना के माध्यम जिनमें ट्विटर, फेसबुक, इंस्टाग्राम जैसे सूचना तन्त्र जो विदेशियों के द्वारा चलाये जाते हैं, हिन्दी भाषा के पराभव एवं पतन का एक और कारण बन सकते हैं। इसलिये यह आवश्यक है कि ऐसे सभी प्लेटफॉर्म सरल हिन्दी में विकसित किये जायें एवं रोचक बनाये जायें।

"सौ करोड़ हो तुम, जिस दिन दोगे मेरा साथ,
सात समुन्दर पार उस दिन होगी मेरी बात"

क्यों खुद से न हो प्रीत मुझे!

दीपा पवार
सहायक लेखाधिकारी (तदर्थ)

क्यों खुद से न हो प्रीत मुझे!
तिमिर में डूब गया था अस्तित्व का सूरज मेरा प्यारा,
बुझती शिखा में खुद को ढूँढ़ा, सहेजा और सँवारा।
निष्प्राण सपने, निर्जीव देह, पस्त हौंसले लेकर,
चली फिर साथ ले दृढ निश्चय की चमक और अंगारा।।
अग्नि की तपन से ही तो सोना कुंदन बनता है,
काँटों की चुभन में ही तो प्यारा गुलाब खिलता है।
विषम वेदना में भी आशा आलोकित करती मुझे,
क्यों खुद से न हो प्रीत मुझे।।

जलकर राख होने से था बेहतर, तपकर निखर जाना,
कँटीली डगर पर पाँव के छालों संग बढ़ जाना।
श्रृंगार भूला यौवन मेरा किंचित न मुरझाया,
रोशन हुईं राहें, जली जब फूल सी काया।।
गहरी थी निशा, मन में भी छाया था अंधेरा जब,
अकेले "दीप" ने जलते कहाँ किसको पुकारा कब।
हार की जीत में भी लुभाता अनचाहा गीत मुझे,
क्यों खुद से न हो प्रीत मुझे।।

चाँदनी रात में चकोर को चाँद से मिलता देख,
ज्योति की चाह में पतंग को ज्वाला में जलता देख।
खुद को बनाया पत्थर से हीरा फिर,
प्रीत की आस में स्वयं को पल–पल रिसता देख।
शशि ने आभा दी, रात ने श्रृंगार किया मुझे,
अमावस से पूर्णिमा का चाँद किया मुझे।
ईश मुझमें था बसा, देता रहा संबल मुझे,
क्यों खुद से न हो प्रीत मुझे।।

खोये हुए खत

संजीव जखमोला
सहायक पर्यवेक्षक

आज फिर कुछ खोए हुए खत मिले।
धुंध छँटी और कुछ मतलब मिले।।
शब्दों ने उकेर दी कुछ मूरतें।
कुछ अनजानी कुछ पहचानी सूरतें।।
यादों में दफन फिर कुछ खंजर मिले।
आज फिर खोए हुए खत मिले।।

लफ्जों में दफन कुछ गुस्ताखियाँ मिलीं।
जवाँ था दौर और लब थे सिले।।
कैसे कहें कि हम बेकसूर थे।
हौंसले के थे टूटे हुए पर मिले।।
आज फिर कुछ खोए हुए खत मिले।
हमें दरिया–सरीखी पहचान मिली थी।
कदम जरा बहके हम समंदर में जा मिले।।
अहसास की डोरी भी टूट गई थी।
मझधार में टूटे हुए थे साहिल मिले।।
आज फिर कुछ खोए हुए खत मिले।
वक्त ने बदल दी हैं अब जरूरतें।।
ठोकरों ने सिखा दिये जीवन के फलसफे।
गुजर गया वक्त अब मैं बढ़ चला हूँ।।
नहीं रहे अब कोई शिकवे गिले।
जिन्दगी ने लिख दिये अब कुछ खत नये।।
काँटो से जख्म थे मेरे सिले।
आज फिर कुछ खोए हुए खत मिले।।

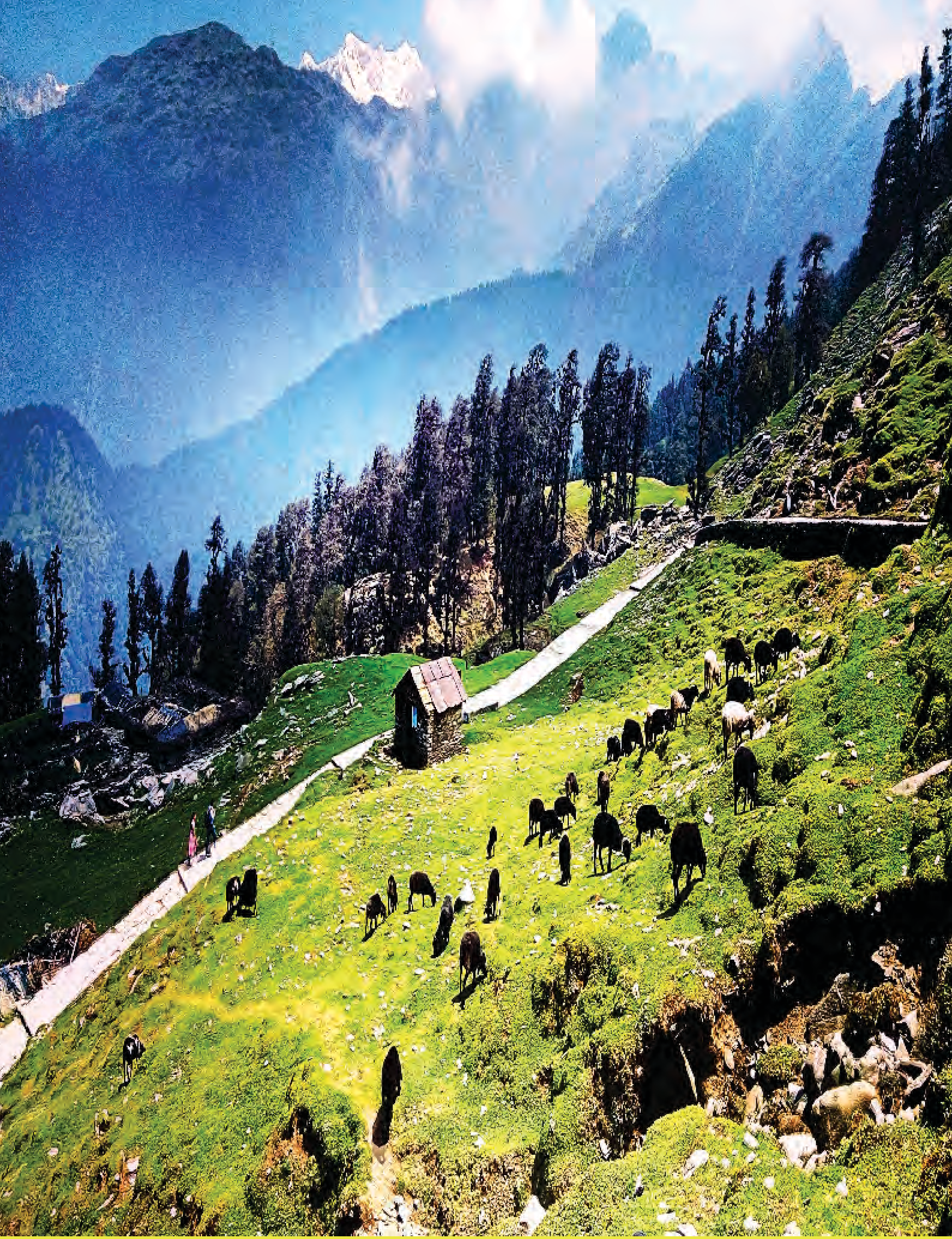

चोपता बुग्याल, रूद्रप्रयाग उत्तराखण्ड
छायाचित्र – प्रशांत किमोठी (खण्डीय लेखाधिकारी–II)

कभी सोचता हूँ...

अरविन्द सिंह रावत
बहुकार्यकर्मी

कभी सोचता हूँ,
कि मेरे होने का क्या मतलब है?

क्या मैं दूसरों के काम आता हूँ?
या अपने ही काम नहीं आ पाता हूँ।

क्या मैं किसी को खुशी दे पाता हूँ?
या अपने लिए ही खुशी ढूँढ़ता रहता हूँ

क्या मैं दूसरों को रास्ता दिखा पाता हूँ?
या खुद ही रास्ते को ढूँढ़ता रहता हूँ।

क्या मैं दूसरों के लिए कुछ कर पा रहा हूँ?
या अपने ही स्वार्थ को पूरा कर रहा हूँ।

क्या मैं दूसरों की प्रेरणा बन पा रहा हूँ?
या खुद दूसरों में प्रेरणा ढूँढ़ रहा हूँ।

क्या मैं किसी के जीवन में उजाला ला पा रहा हूँ?
या खुद अंधकार की ओर चला जा रहा हूँ।

क्या मैं यह कर पाऊँगा....................
किसी दूसरे के चेहरे पर मुस्कान ला पाऊँगा,

किसी के जीवन में प्रेरणा बन पाऊँगा,
हाँ, अगर मैं, "मैं" को छोड़ दूँगा....

हैप्पी फादर्स डे

नवीन कुमार अग्रवाल
वरिष्ठ लेखाकार

आज फिर सुबह से मेरे पड़ोसियों की आवाजें मेरे जहन में दस्तक दे रहीं थीं, शब्दों में इतनी मधुरता थी कि मेरा पौधा तक मुरझाया प्रतीत हो रहा था और आँगन में रखे पुतले ने तो अपने कान ही बंद कर लिए थे। किस्सा वही पुराना था, ऑफिस जाने की जल्दी और वृद्ध पिता की ना चाहते भी हुई गलती पर बेटे और बहू की हिन्दी और अंग्रेजी की मिली जुली फटकार।

पिता समझदार थे, अपने समय के बड़े बाबू रह चुके थे, पत्नी उनके रिटायर होने से पहले ही स्वर्ग में डेप्यूटेशन पर जा चुकी थीं। बुढ़ापे की वजह से हाथ—पाँव अपने नहीं रहे थे, इसलिए अक्सर उनसे खाने—पीने की चीजें जमीन पर गिर जाती थीं और यही अनचाही गलती उन्हें पत्नी को याद करने पर मजबूर कर देती थी कि अब तो मेरा भी फॉर्म भरकर सिफारिश लगा और मुझे भी बुला ले पर शायद ऊपरवाला भी रोते हुए को और रूलाता है, इसलिए लगातार उनकी गुहार अनसुनी ही रह जा रही थी।

आज पुत्र ने पिता को पुनः हाथ जोड़कर विनम्रता से चिल्लाते हुए आग्रह किया कि हमें बख्श दीजिए, खाना नहीं आता है तो खाना खाना छोड़ दीजिए पर रोज सुबह—शाम अपनी बहू को तंग करना बंद कर दीजिए, बाकी एम0एन0सी0 में काम करने वाली बहू भी अंग्रेजी में अपने पति व ससुर का सत्कार कर ही रही थी।

समय के अभाव में जीने वाले दम्पति ने रोज की तरह आज भी जंग को अपने स्तर पर अधूरा छोड़ा और अपने—अपने ऑफिस के लिए निकल गए। वृद्ध पिता ने फिर अपनी पत्नी को याद किया और भूसे में से सुई की तरह अपने पुराने दिनों की यादों में से अपना मान—सम्मान वाला अध्याय खोजने लगे।

सायंकाल बहू और बेटा लौटे, सीधा अपने घर के चौकीदार अपने पिता के पास पहुँचे, उनको नींद से जगाकर, बालों में कंघी करके, चश्मे की धूल को पोंछा।

पिता जी समझ नहीं पा रहे थे कि क्या हो रहा है। बहू ने डिब्बे से पेस्ट्री निकाल कर प्लेट सजाई, पुत्र ने पिता को जबरदस्ती बिठा कर पोपले मुँह में उँगली डाल कर मुह को हँसी का रूप दिया, बहू के आई—फोन के कार्यशील होते ही एक अच्छा से दिखने वाला वीडियो, जिसमें वृद्ध पिता का पुत्र और बहू पेस्ट्री खिला रहे हैं और गले मिलकर "हैप्पी फादर्स डे" विश कर रहे हैं, शूट किया गया।

पिता को यथावत मरणासन्न छोड़ दोनों ने सोशल मीडिया पर वीडियो अपलोड किया, क्षण भर में ही कमेण्ट बॉक्स में बाढ़ आ गई।

हमने भी अपना फर्ज निभाया, अंकल को हैप्पी फादर्स डे बोला पर पता नहीं क्यों, सेण्ड ना करके ब्लॉक कर दिया, शायद जानते हुए भी सच पर झूठा पर्दा डालने का मन नहीं किया।

यशपाल सिंह, 'यशी'
सहायक पर्यवेक्षक

गुलिस्ताँ

गुलों ने मिलकर गुलशन को बनाया,
गुलशन ने वादियों में बहार ला दिया।
वादियों ने फिजाओं को महकाया,
फिजाओं ने चमन में जान डाल दिया।।
भौरों ने फूलों से मकरंद चखा,
मकरंद ने दूसरे गुलों में प्राण डाल दिया।
तितलियों ने भी मकरंद है खाया,
दूसरे फूलों में भी अपना प्यार डाल दिया।।
भौरों तितलियों को माध्यम बनाया,
फूलों ने तो गुलों में नयी जान डाल दिया।
प्यार खेल नहीं इसी ने जीवन बनाया,
एक–एक करके जीवन का स्वाद डाल दिया।।
पराग से मधुमक्खियों ने मधु है बनाया,
मधु में गुलों ने एक नया स्वाद डाल दिया।
जिसने भी प्यार का स्वाद है पाया,
उसने दुनिया में जीवन का संचार डाल दिया।।

वक्त

प्रशान्त कुमार
सहायक लेखाधिकारी (तदर्थ)

एक वक्त था, जब सच्चे लोग मिला करते थे,
अब तो वक्त और हालात का जायका लिया जाता है।
किसी की बातों और शब्दों का
कोई मोल हुआ करता था।
अब तो अपमान भी
बड़े लहजे से किया जाता है।।

बार–बार ना जाने
क्यों कहने को मचल जाता हूँ
लेकिन जुबाँ से भी साथ ना
शब्दों का दिया जाता है।
आप ही बतायें.... ऐसे शब्द क्यों कहें.....
जिन शब्दों का अर्थ ही ....
कुछ और निकल जाता है।।

वक्त और हालात ने....
हमको भी बदल डाला है
आँखों में आँख डाल के,
झूठ बोलने में मजा आता है।
एक वक्त था, जब सच्चे लोग मिला करते थे,
अब तो वक्त और हालात का जायका लिया जाता है।।

चिरैया

पूजा त्रिपाठी
पत्नी श्री नवीन त्रिपाठी
सहायक लेखाधिकारी

छोटे–छोटे पर सफेद, हल्का भूरा रंग तुम्हारा,
नन्हें पैरों फुदक–फुदक कर चलती हो।
चीं–चीं कर मधुर गीत तुम गाती हो,
फूल, अनाज और कीटों को चुगकर खाती हो।।

तिनके–तिनके से बनाती सुन्दर आशियाना,
बना झुंड रहना चाहती तुम आस–पास हमारे।
चेड़ा–चीड़ी, चेर, चरूई, चकली, चिरई,
घर, घटिया जैसे अनेक नाम तुम्हारे।।

होनी–अनहोनी की आहट देती, रोज सवेरे हमें जगाती,
पानी और धूल में करती तुम अठखेलियाँ।
हमारी आधुनिक जीवन शैली ने हमसे किया दूर तुम्हें,
रह न जाना सिर्फ तुम कहानी और किताबों में।।

आओ मिलकर हम इसे बचाएं,
घर में इसका घोंसला बनाएं।
फिर से इसकी चहक लौटाएं,
पर्यावरण को संतुलित बनाएं।
एक–एक कर अनेक "गौरैया",
तभी बचेगी हमारी नन्ही चिरैया।।

कोरोना डायरी

शिवम लिल्हौरी 'बानगी'
लेखाकार

"कहना ही क्या ये नैन एक अनजान से जो मिले, चलने लगे मोहब्बत के जैसे ये सिलसिले" टी.वी. पे चल रहे मेहबूब साहब के इस गाने को सुनते हुए, जैसे ही हमारे नैन अपनी भूतपूर्व मेहबूबा यानी कि हमारी श्रीमती जी से मिले, तो अनजान नहीं, वही रोज़ाना के सिलसिले चले। हमारे नैनो में चाय की गुज़ारिश और उनके गले में शिकायती पुलिंदों की ख़ारिश। साहब, बड़े भारी होते हैं ये शिकायती पुलिंदे, जो कभी न ढो पाए हम, "खसमि दरिंदे"। जी हाँ "खसमि दरिंदे", अगर आप ख़सम हैं तो पत्नी उपनिषद् पढ़ियेगा, उसमें उल्लेख है कि आप ही बीवी के जीवन के सबसे बड़े दरिंदे हैं। आपकी जानकारी के लिए बता दूँ कि ये उपनिषद सिर्फ पत्नियों के पास ही मिलता है। सबके पास एक–एक प्रति। अपने–अपने पतियों के लिए और वो भी कंठस्थ। मतलब कि नो हार्ड कॉपी, सिर्फ सॉफ्टकॉपी। वो अलग बात है कि सुनने में बिल्कुल भी सॉफ्ट यानी कर्णप्रिय नहीं होती।

आपकी माताश्री के पास आपके पिताजी की, आपकी सासू माँ के पास आपके ससुर जी की, आपकी भाभियों के पास भाइयों की, तो सालियों के पास आपके साढ़ू भाइयों की और आपकी – अब आपकी भी बतानी पड़ेगी क्या ? सबकी प्रतियों में एक ही कहानी पर किरदारों के नाम अलग–अलग, वो भी बे–स्वादानुसार। वैसे तो ऊपर लिखे गीत की पंक्तियाँ मुकम्मल ही थीं, शादी के कुछ 4–5 महीनों तलक। उसके बाद तो वही सिलसिले चले, जो सदियों से नर और नारायण को दिक्कत में डालते आये हैं। अपनी–अपनी श्रीमती जी का मूड ठीक रखने की हिकायतें, जिसमें कभी न मिलती हैं रिवायतें। अब त्रिदेवों की त्रिदेवियाँ हों या हमारे घर की इकलौती देवी – रिवाज़ वही हैं और वही रिवायतें।

किसी अंग्रेज पति ने दिन भर का घरेलू काम निबटाने के बाद बीवी से डाँट खाके ही कहा था – "इट्स अ थैंकलेस जॉब", जी हाँ, सही पढ़े, "थैंकलेस" ही तो है – मूड ठीक हो तो फिर खराब होने की तैयारी, मूड खराब हो तो जेब पे चली आरी और आपको क्या लगा, अँगरेज भारत क्यों आये थे। हम बतलाते हैं। लेकिन उससे पहले ये बतला दें कि हमारे मित्र ने हमें ये ब्रह्मज्ञान, कॉलोनी के बाहर लगे वट वृक्ष के नीचे स्थित चाय की दुकान पे दिया था, पान चबाते–चबाते और हमने कड़क अदरकी चाय की चुस्कियों के साथ लपेटा था। सो, आप भी लपेटिये। उसी मित्र के अंदाज–ए–बयाँ।

तो हमारे ताजातरीन, नाजरीन, हुआ यूँ कि 15–16वीं सदी के आस–पास "इट्स अ थैंकलेस जॉब" ये मुहावरा जैसे ही बना और 4–5 अंग्रेजों ने बकिंघम पैलेस के बाहर, नुक्कड़ वाली पनवाड़ी की दुकान पर सहमति जताई, बात पनवाड़ी की बीवी ने उनकी पत्नियों तक पहुँचाई। कान लगा के जो सुनरी थी, अरे, अँगरेज पनवाड़ी ने भी तो "बीटल लीव्स" पे "कटेचु पेस्ट" लगाते–लगाते हामी भरी थी – नहीं समझे "अरे, पान पे कत्था लगाते–लगाते।" खैर छोड़िये, उसके पत्नी फण्ड में भरे तीन गुने लगान की दर्द भरी कहानी, फिर कभी।

हाँ तो कहाँ थे – जी, बात पनवाड़ी की बीवी ने उनकी पत्नियों तक पहुँचाई। बात उन अंग्रेजों के घर तक पहुँची तो उनकी बीवियों ने भौंहें तर्राईं। बस वहीं से चंद अंग्रेज भग लिए, नाव पे बैठ के और रास्ते में मुलाक़ात हुई "वास्को डा गामा" नामक एक सताए हुए पुर्तगाली पति से। साथ–साथ ये भी बताते चलें कि अंग्रेजों और पुर्तगालियों का रिश्ता वैसन ही है जैसन अपने यहाँ यू0पी0 के भइया और बिहारी छलिया का। अंग्रेजन की व्यथा सुन उस पुर्तगाली का कलेजा मुँह को आ गया, वो बोला साथ चलो, सुना है भारत में लोग बड़े खुश रहवे हैं। वहीं चलते हैं इन दुष्टन से दूर। करमजलों को हिदुस्तान तो न मिलो, मगर बे सब पहुँचे अरबी मुल्कों में। जहाँ मुलाक़ात हुई कुछ हिन्दुस्तानियों से। उन कम्बख़्तों को कहाँ पता था कि यहाँ हिन्दुस्तानियों के देवता तक बीवियों से परेशान है, तो बेचारे भक्तों की क्या मज़ाल। तो बस, मिल बैठे चार यार। सुख में अनजान साथ हो न हो मगर दुःख अनेकता में एकता ले ही आता है। खूब रंग ज़मा, जब मिल बैठे सब यार। मगर हिंदुस्तानी बीवियाँ अंग्रेजन थोड़े ही होवे हैं कि पति भग लिये, तो जान दो, दूसरा पकड़ांगे। हमारे यहाँ ठहरा सात जन्मों का साथ। हमारी, हमारी भार्या तो त्रिदेवियों को पूजती हैं, जो खुद ठहरी पत्नियाँ। पतियों की रग़–रग़ से वाकिफ़। जिनका कहा तो पतियों के पूज्य त्रिदेव भी नहीं टाल सकते हैं। क्यूँकि वो बिचारे भी तो पत्नियों के द्वारा सताये हुए हैं। बेगुनाह हो कर भी, सज़ा काट रहे हैं। एक पहाड़ पे, तो दूसरा समुन्दर के बीच और तीसरे की तो पूछों ही मत, न ज़मीं नसीब और ना अम्बर और कड़ी सजा मिले भी क्यूँ ना, पत्नी नामक अत्यधिक प्रतिक्रियाशील पदार्थ का ईजाद भी तो उन्होंने ही किया था। जिसे कह स्वयं के लबों से फूटा था – "विनाशकाले विपरीत बुद्धि।" अब भुगतो, भगवान तो आप ही हो, सो कौन कराएगा शुद्धि। तारीख़ ग़वाह है उसके बाद से किसी को ब्रह्म ज्ञान न दे पाये। दिया हो किसी को, तो आप हमें बतलायें।

ख़ैर, उनकी करनी उनके संग। तो घुमा फिरा के बात यो निकली कि इस गठबंधन का तोड़ तो आज तक ईजाद हो न सका। सो त्रिदेवियन ने बुद्धि फिराई, बाल बच्चन की ज़िम्मेदारी सोच आँख भर आई और हिंदुस्तानी पतियन की हुई घर लौटाई। अँग्रेजन पत्नियाँ तो पूजती न थी, हमारी देवियों को, सो उनके ऊपर जे बात लागू न हुई और हिन्दुस्तानियों के संग ऐसो जमो रंग कि बा भी हो लिए संग। अंग्रेज़ों को तो हिन्दुस्तान में रुकने में ही भला दिखा। घूम फिर कर सौ बातन की एक बात – "भई, बीवी को मनाने से ज्यादा आसान था हिन्दुस्तान का रास्ता ढूँढ़ना।"

चलिए, मुद्दे पे लौटते हैं। अब ये मियाँ–बीबी भागवत क्या बाचनी। कौन से हम पहले शख़्स है जो झेल रहे हैं, फिर आप कहेंगे कि काहे ही बोल रहे हैं। अरे मिट्टी के माधो, इसलिए बोल रहे हैं क्योंकि दर्द जब हदें पार करे और कोविड

भाईसाब की कृपा से हम साझा ना कर सके, तो कलम के सिवा और क्या घिसें। नहीं तो आप ही बताइये पंद्रह दिन एक ही कमरे में, पत्नी के साथ क्या करें। बुद्धि भ्रष्ट रही जो कोविड बाबा की शरण में चले आये, काम धंधा बंद कर चारदीवारी में सिमट आये। आये तो आये, मगर आते–आते कुल्हाड़ी पर भी पैर मार आये। खुद तो नज़रबंद हुए ही, साथ में बीवी को भी संक्रमित कर न्यौत आये। मग़र आप ऐसा करने की गुस्ताखी न कीजियेगा। कोरोना होने पर खुद को नज़रबंद कीजियेगा। याद रखियेगा, कोरोना हो ना हो, दो गज़ की दूरी बीवी से है बेहद जरूरी।

बाकी अगर आप ठहरे खतरों के खिलाड़ी, तो बात और है। वैसे पढ़ते–पढ़ते यहां तक पहुँचे हैं, तो ये तो जग जाहिर ही है कि आपका और हमारा ग़म एकइ है। ठीक बूझे ना... चलिए, आगे की बात फिर कभी, पत्नी जी का बुलावा जो आया है.... जय राम जी की।

उन्मुक्त चाह

डॉ0 दिनेश शर्मा
सहायक लेखाधिकारी (तदर्थ)

चाहत कभी उन्मुक्त नहीं होती,
जकड़ी रहती है बंधनों में,
हँसती–सिसकती–गुमसुम सी,
तरुण–हास या करूण–क्रन्दनों में।

कुछ भीतर की कुछ बाहर की,
पीड़ा के मीठे दर्द सालते हैं इसे,
वेदना के स्वर समेकित हो,
ढालते–पोसते–पालते हैं इसे।

अभुक्त इच्छा विमुक्त नहीं होती,
अशेष चाहत उन्मुक्त नहीं होती।।

जिंदगी का सबक

विक्रान्त कुमार
सहायक लेखाधिकारी

लब हिलते गए, आँसू गिरते गए, पर मेरा नसीब बस सोता रहा,
बह गया मेरी जिन्दगी का दरिया, पर मैं कहीं और हाथ धोता रहा।।

सालों मशक्कत के बाद भी...
सालों मशक्कत के बाद भी, मैं लौट नहीं पाया उस जमाने में,
जहाँ जिन्दगी जिन्दा थी, और मैं बस मौत को ढोता रहा।।

कभी–कभी ले लेता है बचपन अँगड़ाईयाँ.....
कभी–कभी ले लेता है बचपन अँगड़ाईयाँ, पर वो टूटी पतंग कभी जुड़ी नहीं,
ताउम्र माँगता रहा जिन्दगी से मन्नतें, पर ये जिन्दगी कभी मुड़ी नहीं।।

मैं लुट कर भी इस जमाने से......
मैं लुट कर भी इस जमाने से, काबिलियत रखता हूँ खुशियाँ लुटाने की,
दुःख तो बहुत है इस जिन्दगी में मगर, कोशिश है हर वक्त मुस्कुराने की।।

बेहिसाब सवालों से घिर कर.....
बेहिसाब सवालों से घिरकर, भूल गया कि मैं कौन हूँ,
मालूम तो है जवाब हर सवाल का लेकिन, फिर भी मैं मौन हूँ।।

मनोकामना पूर्ण करती हैं बीं माता

बृजभूषण सेमवाल
वरिष्ठ लेखाकार

भारत की देवभूमि, उत्तराखण्ड राज्य के जनपद रूद्रप्रयाग के केदारनाथ घाटी में बसे गाँव मन्द्रवाड़ी में, सदियों से एक अलौकिक अनुष्ठान, बीं माता की पूजा का चलन है। बीं माता को आदिशक्ति माँ भवानी का स्वरूप माना जाता है। यह अनुष्ठान पूजा चैत्र संक्राति से शुरू होने वाले पखवाड़े का लोकोत्सव है। श्रद्धा, लोक–मंगल की कामना, सुख–समृद्धि, आरोग्य, सन्तानोत्पत्ति व अन्य मनौतियों के लिये यह मनाया जाता है। यह हर तीसरे वर्ष में मनाया जाता है। इस वर्ष 2021 में मेरे घर माँ भवानी बीं माता की पूजा की गयी, जिसमें मेरे पिताजी श्री पीताम्बर दत्त सेमवाल जी (सेवानिवृत्त नायब तहसीलदार) मुख्य यजमान थे। इस पूजा में 15 मार्च 2021 से 31 मार्च तक अनुष्ठान चला। इस अनुष्ठान पूजा में माँ भवानी के जयकारे लगाये जाते हैं। गाँव भर के श्रद्धालु आयोजन स्थल पर एकत्रित होकर देवी के भजन व गीत गाते हैं।

बीं माता की कथा–पूजा एक कंठ से दूसरे कंठ तक परम्परा के रूप में पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित होती आ रही है। यह पर्व बंसत के उल्लास का भी पर्व है। फ्यूली, बुरांश व अन्य फूलों से सजी प्रकृति के सौन्दर्य पर प्रफुल्लित मन के उद्‌गारों की अभिव्यक्ति भी, बीं माता के गीतों में सुनने को मिलती है। बीं माता के भजन व गाने सुनने में ऐसे प्रतीत होते हैं कि माँ भवानी साक्षात दर्शन दे रही हों। मन आनंदित हो जाता है। कहते हैं कि–अन्द्रवाड़ी गाँव मे मूल पुरूष इच्छा राम प्रसाद जी, चाँदपुर गढ़ी के पास सेम गाँव से ही करीब चार सौ साल पहले आये थे। तब के एक ही परिवार से सौ परिवार हो चुके हैं। चाँदपुर पटी (चमोली) में नंदा की सालाना जात और बारह वर्षों में राजजात लोक विख्यात है। संभवतः तब भौगोलिक दूरी के कारण यह पर्व रूपांतरित हो गया। जिस तरह नंदा को कैलाश विदा किया जाता है वैसे ही अन्द्रवाड़ी गाँव में एक पखवाड़े तक जागर गायन के बाद, बीं माता और उनकी सहेली को गाँव से शोभा माला के शिवालय तक विदा किया जाता है। यह दृश्य अलौकिक होता है।

बेला के इस भावपूर्ण करूण दृश्य जहाँ बेटी की विदाई होती है, वहीं आदिशक्ति के पुण्य आशीर्वाद की वर्षा का पल भी होता है। ऐसा लगता है कि स्वयं पंचनाम देवता और विद्या मुक्त हस्त से पुष्प वर्षा कर रहे हों। बीं माता की पूजा के प्रथम दिवस पर सभी परिवार अपने–अपने घर में हरियाली रोपते हैं, जो इस पूजा–अर्चना का मुख्य प्रसाद माना जाता है। पूजा स्थल पर श्रद्धालुओं द्वारा गुड़ व तेल चढ़ाया जाता है। पूजा के अंतिम दिन बीं माता को मानव आकृति का रूप देकर सभी ग्रामवासी माँ भवानी बीं माता की स्तुति गाकर व परिक्रमा कर दिल्लेश्वर महादेव मंदिर में विसर्जित करते हैं। हरियाली को एक–दूसरे में प्रसाद स्वरूप बाँटते हैं और रात्रि को सभी ग्रामवासियों के लिए देवी के प्रसाद के रूप में भोज का आयोजन होता है। भोजन ग्रहण कर स्वयं को सौभाग्यशाली मानकर वे अपने आप को धन्य मानते हैं। सदियों से चले आ रहे अनुष्ठान, बीं माता की पूजा में बेरीयाँ (विवाहित), अप्रवासी, प्रवासी, ग्रामवासी सम्मिलित होते हैं। जिस भक्तजन ने बीं माता के जागर गाये, सुने और प्रसाद ग्रहण किया, उसकी मनोकामनाएँ पूर्ण हुई हैं। इस गाँव में अभी तक प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि जिसने अपने घर में बीं माता का अनुष्ठान पूजा का आयोजन किया उसकी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। वर्तमान समय में पूरे भारतवर्ष में सोशल – मीडिया के माध्यम से माँ के जागर व कथा का आनन्द भक्तगण ले रहे हैं। समस्त भक्तजन बीं माता के दर्शन करके पुण्य के भागीदार बनें। माँ का आशीर्वाद लेकर आपकी मनोकामनाएं पूर्ण हों।

दिखावा

अजय कुमार पाल
सहायक लेखाधिकारी (तदर्थ)

दमकती, दिखावे की इस दुनिया में,
क्षणभंगुर है, सब टूट सा जाता है।
रास्ते के कारवें में आगे बढ़ते–बढ़ते,
मजबूत साथ भी छूट सा जाता है।
बदल गया है अंदाज अब पेश आने का,
बातों ही बातों में हर कोई रूठ सा जाता है।
समरसता के गीतों में रह–रह कर ही सही,
विरोधी स्वर कोई फूट सा जाता है।
घिरे हैं लोग हर तरफ महफिलों से,
अपना ही कोई हमें लूट सा जाता है
कैसा ये जीवन, कैसा ये जगत है,
चलते–चलते, कुछ न कुछ छूट सा जाता है।
दमकती, दिखावे की..................

यशपाल सिंह, 'यशी'
सहायक पर्यवेक्षक

चंदा मामा

बादलों की ओट से अक्सर वह झाँका करता है,
जैसे सूरज भी कभी आसमाँ में छिप जाया करता है।
उसमें अभी नादानियाँ छिपी हुई हैं शायद,
तभी तो अक्सर वो गायब हो जाया करता है।
एक नहीं अनेक रूप बदलता ही रहता है,
तभी तो कपड़े बदल–बदल कर आया करता है,
कभी धागे सा रूप बना कर निकला करता है,
तो कभी पूरे अपने स्वरूप में उगा करता है।
रोज–रोज एक ही डगर पर चला करता है,
शायद अपने खोये साथी को ढूँढ़ा करता है।
थक कर जब चूर–चूर हो जाया करता है,
फिर कई–कई दिन वो आराम किया करता है।
रहता तो बहुत दूर है हमारी धरती से,
फिर भी सागर से प्यार किया करता है।
सागर को भी बहुत प्यार है शायद उससे,
तभी तो वो भी उछल–कूद मचाया करता है।
नादानियाँ तो देखो उसकी ऐ "यशी"
पानी को भी अपने पास बुलाया करता है।

हिन्दी पखवाड़ा

(दिनांक 14 सितम्बर 28 सितम्बर 2020)

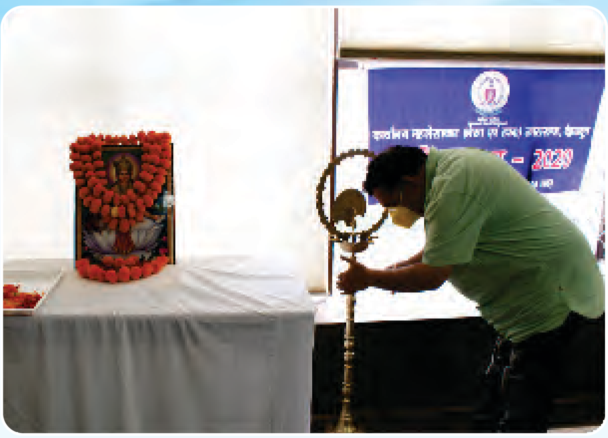

उद्घाटन समारोह में दीप प्रज्ज्वलित करते
श्री संदीप सिंह, प्रधान महालेखाकार

कोविड–19 महामारी के दृष्टिगत हिन्दी पखवाड़ा–2020 का
उद्घाटन समारोह ऑनलाइन आयोजित किया गया

हिन्दी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं
आयोजित की गई। कविता प्रतियागिता में भाग लेते
अधिकारी एवं कर्मचारीगण।

हिंदी पत्रिका "हिमज्योति" के दसवें अंक के प्रकाशन में
विशेष योगदान हेतु श्री अमित कुमार (ऑ0प्र0सं0) को प्रधान
महालेखाकार विशेष पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र देते हुए

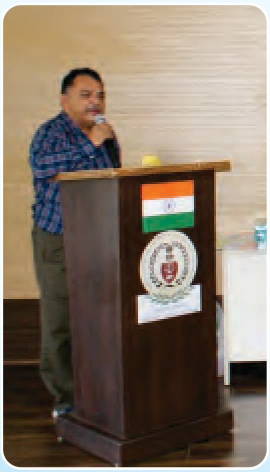

समापन समारोह में कार्यालयकर्मियों
को संबोधित करते श्री संदीप सिंह,
प्रधान महालेखाकार

प्रधान महालेखाकार श्री संदीप सिंह एवं उपमहालेखाकार श्री रवि कुमार वर्मा द्वारा
वार्षिक पत्रिका "हिमज्योति" के दशम् अंक का विमोचन

गणतंत्र दिवस-2021

1. गणतंत्र दिवस के संयुक्त कार्यक्रम में ध्वजारोहण करते श्री एस0 आलोक, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)।
2. श्री संदीप सिंह प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक0) महात्मा गाँधी के चित्र पर माल्यार्पण करते हुए।

3–4. गणतंत्र दिवस समारोह में सम्मिलित कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारीगण

हिन्दी प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित कवि सम्मेलन की झलकियाँ (दिनांक 19 मार्च 2021)

आमंत्रित कवयित्री श्रीमती सुनीता पैन्यूली का स्वागत करते हुए श्रीमती दीपा पवार, सहा0 लेखाधिकारी (तदर्थ)

कवि सम्मेलन में प्रधान महालेखाकार स्वागत भाषण देते हुए।

श्रीमती दीपा पवार, सहा0 लेखाधिकारी (तदर्थ) एवं डॉ0 दिनेश शर्मा, सहा0 लेखाधिकारी (तदर्थ) मंच संचालन करते हुए

आमंत्रित कवि श्री सुनील पंत कविता पाठ करते हुए

आमंत्रित कवयित्री डॉ0 नूतन गैरोला को सम्मानित करते हुए प्रधान महालेखाकार (ले0 एवं हक0)

कविता पाठ करते हुए श्री अजय कुमार पाल, सहा0 लेखाधिकारी (तदर्थ)

कवि सम्मेलन में प्रतिभाग करने वाले समस्त कवि/कवयित्री एवं हिन्दी प्रकोष्ठ कार्मिक

हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी

माह फरवरी 2021 में हिन्दी प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित द्विदिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए प्रधान महालेखाकार तथा कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारीगण।

खेल कोटा के अन्तर्गत उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ी

वरिष्ठ क्रिकेट खिलाड़ी श्री संजीव जखमोला, सहायक पर्यवेक्षक को प्रशस्ति पत्र प्रदान करते हुए प्रधान महालेखाकार

क्रिकेट खिलाड़ी श्री सन्नी राना, वरिष्ठ लेखाकार को विशेष स्मृति चिह्न प्रदान करते हुए प्रधान महालेखाकार

बैडमिण्टन खिलाड़ी श्री रोहित रतूड़ी, व0लेखाकार को विशेष स्मृति चिह्न प्रदान करते हुए प्रधान महालेखाकार

बैडमिण्टन खिलाड़ी श्रीमती नीरू राणा, सहा0 लेखाधिकारी (तदर्थ) को प्रशस्ति पत्र प्रदान करते हुए प्रधान महालेखाकार

वित्तीय वर्ष 2020–21 के दौरान मनोरंजन क्लब की खेल गतिविधियाँ

कैरम प्रतियोगिता (महिला वर्ग) में श्रीमती शालू जाटव, वरिष्ठ लेखाकार विजेता तथा श्रीमती बीना रावत, वरिष्ठ लेखाकार उपविजेता रहीं।

कैरम प्रतियोगिता (पुरूष वर्ग) में श्री सन्नी राना, वरिष्ठ लेखाकार विजेता तथा श्री सुरेन्द्र सिंह, वरिष्ठ लेखाकार उपविजेता रहे।

कैरम प्रतियोगिता (महिला एवं पुरूष वर्ग) के विजेता एवं उपविजेता

वाद–विवाद प्रतियोगिता में श्री भारत शर्मा, वरिष्ठ लेखाकार विजेता तथा श्रीमती देविका रानी, सहायक लेखाधिकारी उपविजेता रहीं।

शतरंज प्रतियोगिता में श्री प्रशांत कुमार, सहायक लेखाधिकारी (तदर्थ) विजेता तथा श्री नितेश, बहुकार्यकर्मी उपविजेता रहे।

दिनांक 02.01.2021 को आयोजित क्विज प्रतियोगिता में कार्मिकों ने बढ़–चढ़कर प्रतिभाग किया।

क्रिकेट टीम के पूर्व सदस्य स्व0 श्री एन0के0 सुब्रमणियन (स0ले0अ0) की स्मृति में आवासीय परिसर कौलागढ़ के प्लेग्राउण्ड में मैत्री क्रिकेट मैच का उद्घाटन करतीं श्रीमती सोमा सुब्रमणियन पत्नी स्व0 श्री एन0के0 सुब्रमणियन

क्रिकेट टूर्नामेंट में विजेता टीम एवं आयोजक मण्डल

चित्र 1, 2 एवं 3 में कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) की महिला खेल गतिविधि के प्रतिभागी
चित्र 4 में मनोरंजन क्लब द्वारा आयोजित सांस्कृतिक संध्या एवं कवि सम्मेलन में भाग लेते कर्मचारीगण।

सेवानिवृत्ति विदाई समारोह 2021

श्री वी0 के0 शर्मा, व0 लेखाधिकारी की सेवानिवृत्ति के अवसर पर स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए प्रधान महालेखाकार श्री संदीप सिंह। इस दौरान वरिष्ठ उपमहालेखाकार (निधि) डॉ0 काव्यदीप जोशी भी उपस्थित रहे।

श्री बी0 सी0 ध्यानी, पर्यवेक्षक की सेवानिवृत्ति के अवसर पर स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए प्रधान महालेखाकार श्री संदीप सिंह

श्री राजेन्द्र सिंह नेगी, सहायक पर्यवेक्षक की सेवानिवृत्ति के अवसर पर स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए प्रधान महालेखाकार श्री संदीप सिंह

अपने सेवानिवृत्ति समारोह में कार्यालय में अंतिम कुछ पल श्री विनोद कुमार शर्मा, वरि0 लेखाधिकारी, श्री भुवन चन्द्र ध्यानी, पर्यवेक्षक एवं श्री राजेन्द्र सिंह नेगी, सहायक पर्यवेक्षक

श्री वी0 के0 शर्मा, वरिष्ठ लेखाधिकारी/हिन्दी की सेवानिवृत्ति के अवसर पर उपहार भेंट करते हुए हिन्दी प्रकोष्ठ के कार्मिक

अपने सेवानिवृत्ति समारोह में मनोरंजन क्लब के पदाधिकारी एवं सदस्यों के साथ श्री विनोद कुमार शर्मा, वरि0 लेखाधिकारी, श्री भुवन चन्द्र ध्यानी, पर्यवेक्षक एवं श्री राजेन्द्र सिंह नेगी, सहायक पर्यवेक्षक

उत्तराखण्ड के प्रसिद्ध मन्दिर

धारी देवी (श्रीनगर गढ़वाल)

रुद्रनाथ बाबा (चमोली)

टपकेश्वर महादेव (देहरादून)

शिव–मन्दिर लाखामण्डल (जौनसार–बावर)

छायाकार : सन्नी राना, वरिष्ठ लेखाकार

श्रद्धांजलि

कोरोना महामारी के प्रकोप के बीच अपने आस–पास अनेक प्रियजनों के असमय प्रयाण ने हमें व्यथित किया है। यह अप्रिय समाचार साझा करते हुए अत्यन्त कष्ट हो रहा है कि विगत एक वर्ष के दौरान इस कार्यालय के चार साथी अपनी जीवन यात्रा अचानक पूर्ण कर पंचतत्त्व में विलीन हो गए। पत्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं के प्रति अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि व्यक्त करता है।

स्व0 श्री पंकज श्रीवास्तव (लिपिक)
जन्म : 14.06.1961
मृत्यु : 27.10.2020

स्व0 श्री एन0के0 सुब्रमणियन (स0ले0अ0)
जन्म : 19.09.1968
मृत्यु : 10.12.2020

स्व0 श्री नागेन्द्र शर्मा (वरि0 लेखाकार)
जन्म : 14.10.1968
मृत्यु : 02.05.2021

स्व0 श्री के0एस0 मार्तोलिया (सहायक पर्यवेक्षक)
जन्म : 24.06.1971
मृत्यु : 07.05.2021

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखण्ड, देहरादून